

कर्म सिद्धांत

तटवर्ती वीर राघव राव



कर्म सिद्धांत



ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीरराघव राव

भीमावरम - 534201.

Ph: 9440309812

email : balajipyramid.bvrm@gmail.com

Rs.120/-



जब तक पक्षी जीवित रहता है तब तक वह चींटियों को खाता रहता है। लेकिन जब चिड़िया मर जाती है तो चींटियां चिड़िया को खा जाती हैं।

समय और परिस्थितियाँ कभी भी बदल सकती हैं। किसी को नीचा मत देखो। किसी को चोट मत पोहचाओं। याद रखें कि आपसे ज्यादा समय शक्तिशाली है।

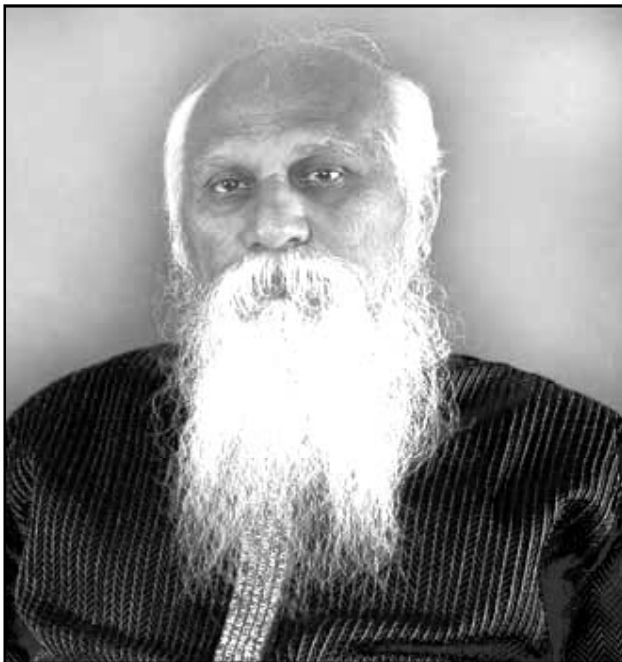
एक पेड़ से 10 लाख माचिस बनाई जा सकती है। लेकिन एक माचिस से 10 लाख पेड़ जल सकते हैं।

इसलिए अच्छे बनो और अच्छा करो।

पवित्र विचारों के साथ जो कुछ भी बोलता या काम करता है, खुशी उस छाया की तरह उसका पीछा करती है जो कभी उसका साथ नहीं छोड़ती।

- गौतम बुद्ध

‘कर्म का महान नियम’



कानून का अर्थ है सिद्धांत...सृष्टि के रहस्य का सिद्धांत। धर्म मूल सृष्टि में गतिविधियों की विशेषता है।

‘सृजनवाद’ कुछ जादुई सिद्धांतों की समझ पर आधारित है। क्योंकि सृष्टि मूलतः धर्म के सिद्धान्तों पर आधारित है। सृष्टि का रहस्य ‘यद् भावं तद् भवति’ का सिद्धांत है। इसे अंग्रेजी में ‘द ग्रेट लॉ ऑफ कर्मा’ कहा जाता है।

कार्य सिद्धांत ‘कारण क्रिया संबंध’ को उजागर करता है। बिना कारण के कोई क्रिया नहीं होती। कारण ‘भावना’; कर्म ‘भवं’ है। देश की परिस्थितियाँ कार्य बनने के कारण के लिए आवश्यक तत्व हैं।

जगत का अर्थ है मूलचैतन्य के प्रथम इच्छा का तत्काल रूपांतरण! व्यापक रचनात्मक कार्य में ‘मानव निर्माण’ की समान विशेषताएं हैं। भव्य

रचना में मानव गतिविधि में समान विशेषताएं हैं। यह एक और ‘महान कानून’ है, जिसका अर्थ है - ‘जैसा यहाँ है, वहाँ वैसा ही है’ - यही सिद्धांत है। यदि हम ‘यहाँ’ की विशेषताओं का निरीक्षण करें, तो हम ‘वहाँ’ की विशेषताओं का निरीक्षण कर सकते हैं।

मानव जीवन मानव मन की रचना है, देश की परिस्थितियाँ संसार की रचना हैं। अर्थात् ‘विराट’ पुरुष की रचना है। विराट पुरुष का विराट अंश ही मानव है। मनुष्य की शक्ति भी असीम और सीमित है। जगत सृष्टि मानव निर्माण के लिए निर्देशित है। ब्रह्मांड मानव निर्माण का चरण है। मनुष्य की रचना उसके अपने मस्तिष्क से पल-पल उभरती है। आप जो भी महसूस करते हैं, जो भी आप कोशिश करते हैं यह ‘भवं’ बन जाता है; यह अनुभव में आता है। हर अनुभव स्वाभाविक रूप से एक नई अनुभूति की ओर ले जाता है। प्रत्येक नई भावना में ‘प्रयास’ जोड़ें, ‘पसंद’ जोड़ें और संबंधित अनुभव को दोहराएं।

यह ‘कर्म का महान नियम’ है जो इस सिद्धांत प्रदान करता है और इस सिद्धांत को समझते हैं वे मुक्त पुरुष हैं, बंधनों से मुक्त हैं, आनंद के सागर में डूबे हुए हैं।

वे जानते हैं कि उनका ‘भाव’ ही उनका ‘भवं’ है।

जो कर्म के इस गुण को और कर्म के सिद्धांत को नहीं जानते हैं - निःसंतान, स्वजन, वे दुःख के सागर में डूब रहे हैं।

-ब्रह्मर्षि पत्री जी

कर्म का सिद्धांत

यह सृष्टि कुछ सिद्धांतों और नियमों से संचालित है। मनुष्य सहित इस सृष्टि में रहने वाला प्रत्येक प्राणी सृष्टि धर्म के सिद्धांतों और नियमों से बद्ध है और सभी को सृष्टि के सिद्धांतों के अनुसार जीना चाहिए। साथ ही सृष्टि के गुणों का पालन करना चाहिए।

जो कोई इनके विपरीत कार्य करता है, वह सृष्टि के विपरीत कार्य करता है अगर वे ऐसा करते हैं तो उन्हें सजा दी जाएगी यानी उन्हें भुगतना पड़ेगा। यही बात है जो पुराणों द्वारा बताई गयी है। रामायण, भागवत, महाभारत हमें यही सिखा रहे हैं। ऋषि वाल्मीकि, वेदव्यास ने इन पुराणों के माध्यम से संसार को ये बातें बताई और इससे हमें अवगत कराया गया।

इनसे वास्तविक मानव जीवन क्या है? यह जीवन क्यों? यह जन्म क्या है? मृत्यु क्या है? आदमी कहाँ से आता है? वह कहाँ जा रहा है? मरने के बाद क्या होता है? मनुष्य को वास्तव में क्या करना चाहिए? कैसे जीना है, किस तरह का काम करना चाहिए? जो नहीं करना है यदि आप करते हैं तो क्या होता है? इन बातों को पुराणों के माध्यम से बहुत अच्छी तरह से बताया गया है। योगीश्वर जैसे ऋषियों द्वारा दिए गए इन शास्त्रों का अध्ययन करने वाले और उन्हें आचरण में लाने वाले सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे। जो नहीं सुनते वे निश्चित रूप से पीड़ित होंगे।

इस सृष्टि के इन सिद्धांतों के बारे में हम उपरोक्त ही नहीं, बल्कि कई लोगों द्वारा दिए गए संदेशों के माध्यम से जान सकते हैं। उनके द्वारा प्रचारित सभी सिद्धांत महान हैं। अब आइए जानते हैं इनमें से एक मुख्य सिद्धांत। वह सिद्धांत 'कर्म सिद्धांत' है।

यह 'कर्म सिद्धांत' सभी के जीवन से जुड़ा हुआ है। क्योंकि कर्म किए बिना न तो किसी का अस्तित्व है और न ही हो सकता है। लेकिन इस 'कर्म

सिद्धांत' को समझे बिना दुनिया में कर्म किए जा रहे हैं। जैसा कि आप देख सकते हैं, कोई भी 'कर्म सिद्धांत' को महत्व नहीं दे रहा है। कितने लोग इस 'कर्म सिद्धांत' के अस्तित्व के बारे में जानते हैं?

क्या आप हर सुबह उठने से लेकर सोने तक कई तरह के कर्मकांड करते हैं? क्या कोई कर्म के बारे में सोच रहा है? क्या आप कुछ सोच रहे हैं? क्या आप किसी शब्द के बारे में सोचते हैं और बोलते हैं? जब तक वे जैसा चाहें वैसा व्यवहार कर रहे हैं। उन्हें जो पसंद है वह कर रहे हैं। वे कितने समय से अपना ख्याल रख रहे हैं, लेकिन क्या यह उनके लिए नुकसान की बात है? है न ऐसा कोई नहीं सोच रहा है। वे ऐसी बात कर रहे हैं। यह ज्ञात नहीं है कि शब्द भी कर्म हैं। वे ऐसे बात कर रहे हैं जैसे उनके पास मुंह है। उसे अपने कर्मों का फल भोगना ही होगा।

'कर्म सिद्धांत' के बारे में किसी भी विचार के बिना जी रहे हैं। इस बात की कोई समझ नहीं है कि हम वास्तव में इस सृष्टि में रह रहे हैं। सृजन सिद्धांतों की भी कोई समझ नहीं है। सृष्टि के 'कर्म सिद्धांत' की कोई वास्तविक समझ नहीं है। यह भी नहीं पता कि हर कर्म का फल होता है। वे बिना किसी समझ के जी रहे हैं। इस प्रकार वे बिना समझे जीते हैं, कर्म करते हैं, और कठिनाइयाँ आने पर पीड़ित होते हैं। तो आइए जानें 'कर्म के सिद्धांत' के बारे में।

'कर्म सिद्धांत' का अर्थ है कि हमने जो कर्म किया है उसका फल हमें भोगना ही होगा। हालांकि यह अच्छा है! भले ही यह बुरा हो! यदि आप जीवन में अच्छे कर्म करेंगे तो आपको अच्छे परिणाम मिलेंगे, यदि आप बुरे कर्म करेंगे तो आपको बुरे परिणाम मिलेंगे, यदि आप किसी भी प्रकार के कर्म करते हैं तो आपको ऐसे परिणाम भोगने होंगे।

एक तरह से हमारा जीवन हमारे द्वारा किए गए कर्मों पर निर्भर करता है। इसका अर्थ है कि हमारा वर्तमान जीवन ऐसा है क्योंकि हमने पूर्व में किए कर्मों के कारण ऐसा किया है।

बहुत से लोग सोचते हैं कि उनके जीवन के चलने का कारण कोई और है। तो कुछ बच्चे... यदि उनका जीवन अच्छा नहीं होता है तो वे अपने माता-पिता को दोष देते हैं। साथ ही, कुछ पत्नियाँ सोचती हैं कि उनका पति ही उनके जीवन के अच्छे नहीं होने का कारण है। पति सोचते हैं कि पत्नी कारण है। और कुछ लोग किसी और को दोष देते हैं। यही सबकी अलग-अलग सोच है। लेकिन कोई किसी के जीवन का कारण नहीं है, वे स्वयं के जीवन के कारण हैं यह जानना चाहिए।

इसलिए हमारा जीवन किसी के हाथ में नहीं है। हमें पता होना चाहिए कि हमारा जीवन हमारे हाथ में है। हमारे हाथों में, हमारी हथेलियों में नहीं। यह हाथों में है जो ये हाथ करते हैं, अर्थात् कर्मों में। इसलिए वे किसी के जीवन के कारक हैं। कारण यह है कि उन्होंने ही ऐसा जीवन बनाया है, यानी जो उन्होंने अतीत में किया है।

व्यक्ति को यह जानना चाहिए कि अतीत में बिना सोचे-समझे किए गए कर्मों के कारण अब कठिनाइयाँ और हानियाँ आ रही हैं। आपको यह भी पता होना चाहिए कि अब आपके पास जो भोग और आनंद हैं, वे आपके द्वारा पूर्व में सोचे और किए गए कर्मों के कारण हैं।

और बहुत से लोग सोचते हैं कि उनका जीवन उनके द्वारा किए जाने वाले भजन और पूजा पर निर्भर करता है। कुछ लोग सोचते हैं कि यह उनके द्वारा की जाने वाली प्रार्थनाओं पर निर्भर करता है। कुछ लोग मानते हैं कि यह उनके द्वारा की जाने वाली प्रार्थना पर निर्भर करता है और अन्य मानते हैं कि यह उनके द्वारा की जाने वाली पूजा पर निर्भर करता है। इसलिए अपनी मान्यता के अनुसार पूजा करते हैं। लेकिन किसी का जीवन इस बात पर निर्भर नहीं करता कि वह किसकी पूजा करता है, यह उसके अभ्यास पर निर्भर करता है। अर्थात् केवल कर्मों पर निर्भर करता है।

यदि भक्ति पर आधारित जीवन होता तो सभी का जीवन बेहतर होता।

कारण यह है कि हर कोई किसी न किसी देवता की अपने विश्वास के अनुसार पूजा करता है। लेकिन किसका जीवन अच्छा है? हर किसी को किसी न किसी तरह की समस्या, कठिनाई, कभी न कभी बीमारी होती है। कष्ट और बेचैनी होती है। भले ही कठिनाइयाँ दूर होती प्रतीत हों, वे फिर से आएंगी। कहना चाहिए कि किसी का जीवन अच्छा नहीं होता। इसलिए यह ज्ञात है कि पूजा के आधार पर कोई जीवन नहीं है।

और तो बचपन से अच्छी पूजा करने वालों की, पूजा करते आए हो ना! आप प्रार्थना कर रहे हैं तो और आपको यह परेशानी क्यों हुई? अर्थात्, वे तुरंत कहते हैं, 'आह! कर्म कहाँ जाते हैं? क्या हो गया है। क्या यह अनुभव नहीं किया जाना चाहिए?' कहा जाता है इसका अर्थ यह स्वीकार करना है कि किए गए कर्मों के अनुसार ही जीवन ऐसा है, है न? इसलिए, किसी का जीवन दूसरे के हाथ में नहीं है। हमें पता होना चाहिए कि यह कर्मों में है जो हम करते हैं।

बहुत से लोग सोचते हैं कि मेरा जीवन ऐसा इसलिए है क्योंकि ईश्वर ने दया और कृपा के बारे में नहीं सोचा है। कुछ लोग भगवान हैं, यह मानते हैं और मैं ऐसा इसलिए हूँ क्योंकि उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया है। सब कुछ ईश्वर की कृपा कहलाती है। अर्थात् वे सोचते हैं कि जीवन ईश्वर पर निर्भर है। लेकिन ईश्वर के भरोसे, ईश्वर की कृपा के भरोसे, सभी का जीवन बेहतर होता। क्योंकि वह कुछ को आशीष नहीं देता, परन्तु यदि आशीष देता है, तो सब को आशीष देता है। सब उसके लिए बराबर हैं। इसलिए यह जान लेना चाहिए कि किसी का भी जीवन इस बात पर निर्भर करता है कि वह क्या करता है। यह ज्ञात होना चाहिए कि सृष्टि में एक 'कर्म सिद्धांत' है।

इसलिए ऋषि वशिष्ठ ने योग वशिष्ठ में ऐसा कहा है कि 'अपने कर्म के अलावा कुछ भी दिव्य नहीं है'।

अगर आपने पहले फोक फिल्में देखी हैं तो जादूगर की जिंदगी किसी

तोते में होती है। यानी तोता अच्छा होगा तो जादूगर का जीवन अच्छा रहेगा। अगर वह तोता ठीक हो गया तो जादूगर की जान पर आफत आ जाएगी। अगर तोता मर जाता है, तो जादूगर मर जाता है। मानो जादूगर की जिंदगी का राज तोते में है। मानव जीवन का रहस्य उनके कर्मों में है।

कर्म अच्छे होंगे तो मनुष्य का जीवन अच्छा रहेगा। यदि कर्म अच्छे नहीं हैं तो मानव जीवन अच्छा नहीं है। इसलिए, किसी का जीवन वह नहीं है जो वे सोचते हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे क्या करते हैं। इसलिए मनुष्य के जीवन में चीजें हमेशा अपेक्षा के अनुरूप नहीं होती क्योंकि वह सोचता है कि जीवन अच्छा होना चाहिए। लेकिन वे इसका उल्टा करते हैं। तो जो सोचा जाता है वह एक बात है, जो होता है वह दूसरी बात है।

इसलिए कहा जाता है कि 'जो कुछ सोचता है, वह कुछ करता है'। और भगवान जो सोचता है वह क्यों नहीं करता है? यानी वह जो सोचता है उसके लिए भगवान की रचना में कोई प्रावधान नहीं है। केवल एक प्रावधान है उन्होंने जो किया है उसके लिए। इसे 'कर्म सिद्धांत' कहा जाता है। यह नहीं जानते हुए, वे कहते हैं 'यदि वह अपने बारे में सोचता है, तो वह कुछ करेगा'। इसलिए, उसे पता होना चाहिए कि 'वह जो कुछ भी करेगा, भगवान उसे देगा'।

इसलिए शास्त्रों में 'जितना करेगा उतना ही है!' यह कहा जाता है। 'सिर्फ चाहने से नहीं मिलेगा!' इसे न समझकर, बहुत से लोग इसे बंद करना चाहते हैं और संकल्प लेना चाहते हैं। जब तक मनुष्य आसान तरीकों की तलाश में है, तब तक 'मुश्किल - आसान करना चाहते हैं' यह इसका कारण है। सब कुछ बिना प्रयास के आना चाहिए। लेकिन ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है जो सृष्टि में बिना मेहनत के आती हो। मेहनत से सब कुछ मिलता है।

आप किसी भी तरह की मेहनत करेंगे तो आपको वैसा ही फल मिलेगा। बिना मेहनत के कुछ नहीं मिलता। इसलिए उन्होंने कहा, कड़ी मेहनत का भुगतान होता है। उन्होंने कहा, 'कृषितो नास्ति दुर्भिक्षाम्'। इसका अर्थ है

कि परिश्रम से दुःख दूर हो जाएगा। कठिनाइयाँ दूर हो जाएँगी, दयनीय स्थितियाँ गायब हो जाएँगी। इस सृष्टि में यही व्यवस्था है। शास्त्रों में बुजुर्गों ने यही कहा है।

तो जानिए कि कर्म का एक सिद्धांत है। इसका अर्थ है 'काम करोगे तो फल मिलेगा।' कोई काम नहीं हुआ तो क्या हुआ कोई नतीजा नहीं निकलेगा। इसका अर्थ है कि यदि आप कोई कर्म नहीं करते हैं, तो आपको कोई फल नहीं मिलेगा।

इसलिए, हमारा जीवन हमारे हाथ में है, अर्थात् हमारे कर्मों में है। आपको यह पता होना चाहिए। हमारा वर्तमान जीवन पिछले कर्मों पर आधारित है। इसके अतिरिक्त वर्तमान जीवन में कष्ट का और कोई कारण नहीं है। ज्ञात हो कि सृष्टि में कर्म के सिद्धांत के अनुसार ही किसी का भी जीवन चलता है।

यह न जानते हुए बहुत से लोग यह सोचकर कुंडली दिखाते हैं कि यदि उनका जीवन अच्छा नहीं है तो कुंडली में कोई अंतर है। वे सोचते हैं कि वास्तु में दोष है और वास्तु को ठीक करने का प्रयास करते हैं। कुज दोष और शनि दोष के लिए पूजा करते हैं। मुहूर्त निर्धारित करते हैं। शगुन देखा जाता है। इनकी वजह से उन्हें लगता है कि जिंदगी यही है।

सोचना! विवाह शुभ मुहूर्त में ही होते हैं। कितनी शादियां सफल हुई? कितने परिवार खुश हैं और सुचारु रूप से चल रहे हैं? खुशी के साथ कितनी चीजें हैं? कितने पति-पत्नी खुशी से रहते हैं और एक-दूसरे को समझते हैं? यदि विचार एक प्रकार का कर्म है तो ये मुहूर्त क्या करते हैं? मुझे बताओ साथ ही अगर कोई कर्म के इस सिद्धांत को नहीं समझता है, कर्म के सिद्धांत को नहीं जानता है, किए गए कर्मों को भूल जाता है और जीवन अच्छा नहीं है, अगर रुद्राक्ष पहना जाए तो यह बदल जाएगा?

अंगूठियां, ताबीज, कवच पहने तो जीवन क्या बदलेगा? क्या मुश्किलें दूर होंगी? यदि आप धनलक्ष्मी और कुबेर यंत्र धारण करते हैं, तो क्या आप

अमीर और गरीब हो जाएंगे? अगर नाम बदल गए हैं! क्या नाम के अक्षर बदलने से जीवन बदल जाता है?

इतना कुछ बदला जा रहा है लेकिन व्यवहार नहीं? क्या आप नौकरी बदलते हैं? क्या आपको लगता है कि आप जो करते हैं वह सही होना चाहिए? सृष्टि में कर्म के सिद्धांत को नहीं समझ सकते? क्या आप सृष्टि और धर्म के नियमों को जानना चाहते हैं? क्या आप जानना चाहते हैं कि सही तरीके से कैसे काम करें और सही तरीके से कैसे जिएं? सच्चाई जानना चाहते हैं? इन सब के बारे में सोचना बंद करने की कोशिश करने का क्या मतलब है? पहले व्यवहार बदलना होगा, कर्म बदलना होगा। उसके कर्म सृष्टि के अनुरूप होने चाहिए। इसका अर्थ है 'सत्य बोलना चाहिए - धर्म का पालन करना चाहिए'।

यही वेदों का संदेश है।

‘सत्यं वद - धर्मं चर’

कितने लोग इस वाक्य को समझते हैं? कितने लोग ‘सत्य’ के बारे में जानते हैं? सच क्या है? सच क्यों कहते हैं? वास्तविक सत्य की महानता क्या है? सत्य को न जानने में क्या नुकसान है? कौन पता लगाने की कोशिश कर रहा है? क्या वह वास्तव में सच्चाई में जी रहा है? या फिर झूठी ज़िन्दगी जी रहा है? क्या वह सत्य की ओर मुड़ा? क्या उसने झूठ का सहारा लिया? क्या आपको यह सब नहीं पता होना चाहिए?

इसलिए इसे ‘सत्यमेव जयते’ कहा जाता है। यानी सत्य की जीत होगी। इसका अर्थ है कि जीवन में जीतना है तो सत्य का सहारा लेना होगा। सच में जीने के लिए नेक कर्म करने होंगे। वह जीत है। किसी और चीज से विजय प्राप्त नहीं की जा सकती। तो पहले सच जान लीजिए। सुनिश्चित करें कि आपके कर्म सत्य हैं।

साथ ही कितने लोग धर्म के बारे में जानते हैं? कितने लोग धर्म का अभ्यास करते हैं? वास्तविक धर्म क्या है? धर्म का अभ्यास क्यों करें? धर्म का

अभ्यास करने के लिए क्या करना चाहिए? वास्तविक धर्म की महानता क्या है? यदि कोई धर्म का पालन नहीं करता है तो क्या होता है?

क्या उन्होंने 'धर्मो रक्षति रक्षितः' नहीं कहा? आप जब धर्म की रक्षा करेंगे वही आपकी सुरक्षा करेगा। यह स्पष्ट है कि यदि आप धर्म की रक्षा करेंगे तो आप बच जाएंगे। क्या यह विज्ञान में नहीं कहा गया है?

आप कब से बचने, बचाने की प्रार्थना कर रहे हैं लेकिन धर्म को बचाने की कोशिश क्यों नहीं करते? वे रक्षा के लिए रो रहे हैं लेकिन वे धर्म की रक्षा करना क्यों नहीं जानते? क्यों अगर हम कुछ भी जाने बिना अपनी मर्जी से रहते हैं, व्यवहार करते हैं, काम करते हैं और कर्म करते हैं, तो क्या मुश्किलें होंगी? इसलिए व्यक्ति को 'कर्म के सिद्धांत' को जानना चाहिए।

काम किया जाना चाहिए। क्या उन ऋषियों, मुनियों, ब्राह्मणों ने सिर्फ शिक्षा दी थी? यदि आप यह सब छोड़ देते हैं तो आप क्या करते हैं? यदि आप उन सबके द्वारा सिखाए गए 'धर्म मार्ग' को छोड़कर संकल्प करना चाहते हैं! क्या कठिनाइयाँ मिट जाएँगी? वे कैसे मिट जाएँगी? यदि आप ऋषियों द्वारा सिखाए गए धर्म मार्ग का अनुसरण करते हैं, तो कोई वास्तविक कठिनाइयाँ नहीं होंगी? यदि आप जैसा वे कहते हैं, वैसा ही जियो, तुम कर्म क्यों करते हो? तो, कम से कम अभी से, 'कर्म सिद्धांत' के बारे में सीखो। सही कर्म करो। जीवन को सही बनाओ।

इसलिए, 'कर्म सिद्धांत' के बारे में हम देवताओं, दिव्य दूतों, संतों, महात्माओं और महापुरुषों के बारे में सोचते हैं की उन्होंने क्या कहा था।



कर्म सिद्धांत के बारे में,

श्री कृष्ण:

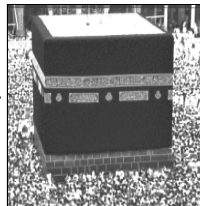
‘जो जैसा कर्म करेगा वैसा ही फल भोगेगा।’

गौतम बुद्ध: ‘कोई भी व्यक्ति अच्छा महसूस करता है जब वह कोई पाप करता है लेकिन जब उस पाप का परिणाम महसूस होता है, तो जीवन दयनीय हो जाता है।’



जीसस: ‘जो बोओगे वही काटोगे’। (ऐसा कहा जाता है कि आप जैसा कर्म करेंगे वैसा ही फल आपको मिलेगा।)

मुहम्मद पैगंबर : उन्होंने कहा, ‘यह दुनिया एक ऐसा खेत है जहाँ कल (अगले जन्म) के लिए आज फसलें उगाई जाती हैं’।



ब्रह्मर्षि वशिष्ठ : ‘जो कुछ करता है वह उसी परिणाम का अनुभव करेगा’। इसलिए, किए गए कर्म के अलावा, ऐसा कुछ भी नहीं है जो भगवान या प्रारब्ध भी नहीं है।

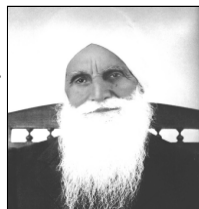
श्री रामकृष्ण परमहंस : हम जो भी कर्म करते हैं, हम उसका फल भोगते हैं। मिर्च खाओगे तो मुंह जल जाएगा। चीनी खाने से मुँह मीठा होता है न?



गुरु नानक: ‘मैंने जितना किया है उतना अनुभव किया है। किसी और के बारे में सोचने का कोई मतलब नहीं है।’

राधा स्वामी:

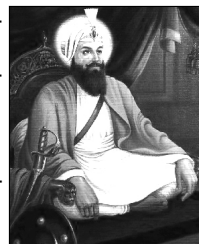
‘जो कर्म किए जाते हैं वहां अनुभव प्राप्त किये जायेंगे’।



कबीर : ‘जिसने अपने कर्म किए हैं वह उन्हें अनुभव करेगा’। उन्होंने कहा, ‘जो हाथ कर्म करता है, वह हाथ परिणाम महसूस करता है।’

गुरु साहब : 1) कर्म सिद्धांत प्रकृति का अपरिवर्तनीय शाश्वत नियम है। यह किसी के पिछले और आध्यात्मिक जीवन की नींव है।

2) ‘एक आदमी दिन रात में जो कुछ भी करता है वह उसके नसीब में लिखा जाता है’।



कन्फ्यूशीवाद

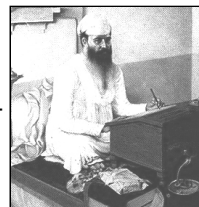
आप जैसे चाहते हैं कि लोग आपके साथ क्या नहीं करें ऐसा आपको भी उनके विषय में होना चाहिए।

महाज्ञानी सहजोबाई

जानवर, पक्षी, नर, सुर, असुर, जलचर और कीट सभी अपने-अपने कर्म भोग रहे हैं।

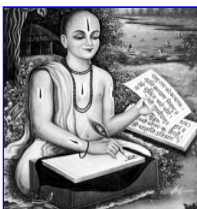
भाई गुरुदास

अच्छा करने से बुरा नहीं मिलेगा, बुरा करने से अच्छा नहीं मिलेगा’।



गुरु रविदास

‘मनुष्य को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि उसके कर्मों का फल अवश्य मिलेगा’।



तुलसीदास :

कर्म का सिद्धांत इस दुनिया में राजशाही है।

ब्रह्मर्षि पत्री जी

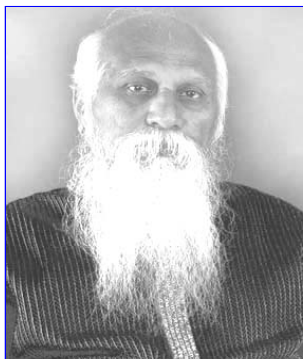
कर्म सिद्धांत के बारे में बहुत सख्त हैं। वह जो कहते हैं वह यह है कि 'हम जो भी कर्म करते हैं, वह निश्चित रूप से समय के अनुसार उस कर्म के उचित फल की ओर ले जाएगा'।

उन्होंने कर्मसिद्धांत के बारे में यह कहते हुए एक संदेश भी दिया, 'कर्म के आधार पर एक पेड़ है ...' साथ ही यह भी कहा कि 'यदि आप बड़े पाप करते हैं, तो आपको बड़ी बीमारियाँ मिलेंगी, यदि आप छोटे पाप करेंगे, तो आपको छोटे-छोटे रोग होंगे।', यदि आप 'विभिन्न प्रकार के पाप करते हैं, तो आपको विभिन्न प्रकार के रोग होंगे।' जंतुओं का वध करना ही मानवों का अत्यंत पाप कर्म है।

इसके अलावा, वह बहुत दृढ़ता से कह रहे हैं कि 'मांस एक पापपूर्ण भोजन है, यह सभी बुराइयों का स्रोत है, इसलिए मांसाहार से बचें और शाकाहारी भोजन करें'।

अतः पत्री जी 'कर्म सिद्धांत' के अनेक प्रसंगों में 'कर्म' का उल्लेख करते हैं। तो यह मत सोचो कि कर्म का कोई सिद्धांत नहीं है।

उपरोक्त सभी ने कर्म के इस सिद्धांत के बारे में अलग-अलग तरह से अपने-अपने अंदाज में बताया है। कोई कुछ भी कहे, सृष्टि के एक ही 'कर्म सिद्धांत' को कई तरह से समझाया गया है। हमारे कर्म कैसे होने चाहिए? हमें किस प्रकार के कर्म मिलते हैं? जीवन ऐसा क्यों है? हमें उन बातों के बारे में विस्तार से बताया गया है।



अगर हम वही करते हैं जो वे कहते हैं तो हम कैसे जीने वाले हैं? कैसे व्यवहार करें? किस तरह का काम करें? यह समझ में आता है। ठीक से जीने का मौका मिलता है। तो आइए जानते हैं इन सभी के द्वारा दिए गए संदेशों को विस्तार से उदाहरण के साथ।



श्री कृष्ण

‘जो कोई कर्म करेगा वह उस कर्म का फल भोगेगा’।

भगवान श्रीकृष्ण के संदेश के अनुसार हमें यह जानना चाहिए कि यदि हम जीवन में अच्छा करेंगे तो हमें अच्छा फल मिलेगा और यदि हम बुरा करेंगे तो बुरा फल भोगेंगे।

अगर हम सबको खुश रखेंगे तो हमें जीवन में खुशियां मिलेंगी। अगर हमें प्रताड़ित किया जाता है, तो हम जीवन में यातना का अनुभव करेंगे। और अगर हम गाली देंगे तो हमारी बेइज्जती होगी। हम धोखा देंगे तो धोखा खाएंगे, नष्ट किया तो नष्ट हो जायेंगे, कष्ट देंगे तो कष्ट पाएंगे। हम जो देते हैं वही हमें मिलता है। हम जो भी करेंगे, उसका अनुभव करेंगे।

यदि हम श्रीकृष्ण के संदेश को समझ लें तो हम जैसा चाहें जी सकते हैं और जो चाहें प्राप्त कर सकते हैं। एक तरह से हम अपने जीवन को वैसा ही बना सकते हैं जैसा हम उसे बनाना चाहते हैं। वह सब हो सकता है क्योंकि हमारा जीवन हमारे हाथ में है। यह हमारे हाथ में है क्योंकि हमारा जीवन हमारे हाथों पर निर्भर करता है अर्थात् हमारा जीवन हमारे कर्मों पर निर्भर करता है।

इसलिए हमें वह देना चाहिए जो आप चाहते हैं और जो आप नहीं चाहते हैं उसे न दें।

इसलिए यदि आपको धन चाहिए तो आपको धन देना चाहिए। इसका अर्थ है दान करना। तब हम धन पाने का अधिकार अर्जित करते हैं, और यदि हमें ज्ञान चाहिए तो हमें ज्ञान देना ही चाहिए। अर्थात् सभी को ज्ञानी बनाने का प्रयास करना चाहिए।

अगर आप बीमारियां नहीं चाहते हैं तो किसी को भी टॉचर नहीं करें, जानवरों पर अत्याचार नहीं होना चाहिए। जो मांस खाते हैं वे हिंसा का कारण बनते हैं।

साथ ही, अगर आप खुशी से रहना चाहते हैं, तो आपको सभी को खुश करने की कोशिश करनी चाहिए। किसी को नुकसान या परेशानी नहीं होनी चाहिए। घर के ही नहीं, बाहर के भी। जो लोग ऐसे जीते हैं, उनका जीवन वैसा ही होगा जैसा वे सोचते हैं। इसके अलावा, सेवाएं की जानी चाहिए। सेवा गतिविधियों में भाग लें। कारण यह है कि सेवा दूसरों को प्रसन्न करने का कार्य है। इसलिए जो अच्छी सेवा करते हैं वे जीवन में सुखी रह सकते हैं।

श्री कृष्ण ने उपरोक्त संदेश दिया है ताकि हम सभी का जीवन अच्छा हो।



गौतम बुद्ध

जब कोई पाप करता है, तो वह आनंदित महसूस करता है। लेकिन जब कोई उस पाप का फल भोगता है, तो जीवन दुखी हो जाता है।

भगवान बुद्ध ने भी उपरोक्त संदेश के माध्यम से कर्म के सिद्धांत के बारे में बताया। उनके संदेश से हमें यह जानने की जरूरत है कि पाप तुरंत नहीं होता है, अर्थात् कठिनाई नहीं आती है। परन्तु जैसे ही वह पाप पक जाता है, उसका फल अर्थात् कष्ट आ जाता है।

स्वाभाविक रूप से पाप होने का कारण यह है कि पाप करने के तुरंत बाद कुछ नहीं होता। तो आपको क्या लगता है क्या हुआ? कुछ नहीं हुआ है न? यह सोचकर बार-बार यही पाप करते रहेंगे। किसीके बतानेपर भी नहीं सुनेंगे।

परन्तु यदि उसी भूल अर्थात् पाप का फल तुरंत देख लिया जाए तो वह भूल और पाप दुबारा नहीं होगा। यदि आप जानते हैं कि ऐसा पाप करने का परिणाम कितना कठोर होगा, तो क्या आप उस गलती को दोबारा करेंगे? निश्चित रूप से नहीं। उदाहरण के लिए, जिस बच्चे ने कभी आग नहीं देखी है, वह 'आग को मत छुओ' यह बात नहीं सुनेगा। वह छूने की कोशिश करता है। लेकिन उसे एक बार आग को छूने दो। तुरंत हाथ जल जाएगा। बहुत दर्द होगा। अब देखो, यदि आग को छुआ भी जाए, तो वह न छुई जाएगी। परिणाम तत्काल था इसलिए।

साथ ही जब किसी का पैर कट जाता है तो कोई उसे तुरंत सजा देकर पैर हटा देता है, भले ही कोई दुर्घटना हो जाए और वह अपना पैर खो दे, यानी अगर तुरंत परिणाम देखा जाए तो वह गलती और पाप फिर से नहीं होगा। लेकिन इस सृष्टि का सिद्धांत यह है कि पाप का परिणाम तुरंत नहीं होता। कठिनाई तभी आती है जब वह पाप पक जाता है। तो हर कोई पाप कर रहा है।

ऐसा हमारे पुराणों के माध्यम से बुजुर्गों ने बताया है। शिशुपाल का वध देखें। शिशुपाल ने 10 गलतियाँ कीं लेकिन कुछ नहीं हुआ। 50 गलतियाँ और कुछ नहीं हुआ। इसके अलावा, असंतुष्ट व्यक्ति ने भगवान कृष्ण की निंदा की। 99 गलतियाँ करने के बाद भी कुछ नहीं हुआ। कारण उसका पाप है जो पका नहीं है।



लेकिन जब उसने सौ गलतियाँ कीं, तो उसका सिर उड़ गया क्योंकि १००वीं गलती ने उसके पाप को पका दिया। इसके अनुसार यदि हम पाप भी करें तो कुछ नहीं होता, इसका अर्थ है कि हमारा पाप अभी पका नहीं है। इसलिए पाप करने का एक कारण यह भी है कि उसका फल तुरंत दिखाई नहीं देता। दूसरा सुखभ्रान्ति है। सुखभ्रान्ति से ही अर्थात् व्यक्ति सुख पाने के इरादे से पाप करता है।

भोजन करना हमारे द्वारा अनुभव किए जाने वाले सुखों में से एक है। इसलिए मनुष्य खाने को अधिक महत्व देता है। तरह-तरह के स्वाद के साथ खाना बनाया और खाया जाता है। ऐसे भी लोग हैं जो दिन में तीन बार और उससे भी ज्यादा खाते हैं। इसका कारण यह है कि यह खाने में बहुत अच्छा होता है। इसलिए जब कोई स्वादिष्ट खाना देखता है तो पागल हो जाता है। क्योंकि खाने में उतना सुख है।

खुशी के इस भ्रम के कारण बहुत से लोग मांस खाते हैं। मांस खाकर वे परोक्ष रूप से हिंसा कर रहे हैं। अर्थात् पशु, पक्षी और जल जीव हिंसा का कारण बन रहे हैं, हिंसा एक पाप है, वे पाप के दोषी बन रहे हैं। और तुम यह पाप क्यों कर रहे हो? लेकिन अगर आप ऐसा खाते हैं तो कुछ महीनों और वर्षों के बाद आपको उस पाप का फल भविष्य में बीमारियों के रूप में भोगना पड़ेगा, देखिए आपको कितना नर्क भोगना पड़ेगा! कितनी पीड़ा! वे उस दर्द को सहन नहीं कर सकते! कुछ लोग इस तरह जीने से मर जाना बेहतर समझते हैं। दर्द सहने में असमर्थ आत्महत्या करने वाले भी हैं।

उफ़! क्या मुझे इतना कष्ट उठाना चाहिए? यह दर्द कैसे दूर होगा? इस दर्द को कौन दूर कर सकता है? ऐसा कहकर, देवता घूमते हैं, गुरुओं के चारों ओर, स्वामी जी के चारों ओर, डॉक्टरों के चारों ओर, प्रार्थना हॉल के चारों ओर। अगर कोई कहता है कि हम उस दर्द को दूर कर देंगे, तो वे वही करेंगे जो वे करना चाहते हैं। उस दर्द को दूर करने के लिए कोई भी राशि खर्च करने में संकोच न करें। यह सब किसी और चीज से ज्यादा असहनीय है।

एक तरफ बीमारी है और दूसरी तरफ ढेर सारा पैसा खर्च करने की आर्थिक पीड़ा। जो कमाया है वह सब खर्च हो जाएगा। यदि पर्याप्त नहीं है, तो वे उधार लेंगे। नहीं तो संपत्ति बिक जाएगी। वह अपने साथ-साथ सबको हर बात में परेशान करते हैं और किसी को चैन नहीं है। रोगों के कारण जीवन कष्टमय हो जाता है। ये सभी रोग पाप का परिणाम हैं। इसलिए भगवान बुद्ध ने स्पष्ट रूप से कहा, 'जब आप कोई पाप करते हैं, तो सुख का भ्रम होता है, लेकिन जब आप उस पाप के परिणामों का अनुभव करते हैं, तो जीवन अत्यंत दयनीय बन जाता है।'

यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप सुख के लिए पाप नहीं करेंगे।

खुद के हाथों से अपना जीवन नरक जैसा नहीं बनाते। क्या पैसा कमाना भी खुशी के लिए नहीं है? अगर आपके पास अच्छा पैसा है तो आप एक बड़ा घर बना सकते हैं। खूबसूरती से सजाया जा सकता है। एसी, टीवी, फ्रिज आदि लगा सकते हैं। कार और बाइक की खरीदारी हो सकती है। विलासिता में रह सकते हैं। मनोरंजक यात्राएं कर सकते हैं। अगर आपको ऐसी सुख-सुविधाएं चाहिए, तो आपको पैसे की जरूरत है। इसलिए हर कोई उस पैसे को कमाने की कोशिश कर रहा है। खुशी के लिए कमाना गलत नहीं है, लेकिन उस पैसे को कमाने के लिए कई पाप किए जाते हैं। यानी झूठ बोल रहे हैं और धोखा दे रहे हैं। वे अत्याचार और अतिक्रमण कर रहे हैं। कितने पाप हो रहे हैं।

लेकिन जब वे पाप किए जाते हैं, जब धन कमाया जाता है, तब अच्छा होता है जब धन का आनंद लिया जाता है। लेकिन जब वह पाप पक गया, भले ही नुकसान हो, अत्यधिक वित्तीय कठिनाइयाँ हों, चाहे आर्थिक समस्याएँ आएँ, उन कठिनाइयों को वहन नहीं किया जा सकता है। उस दबाव को सहन नहीं कर पाता है। दर्द अवर्णनीय है। वह जीवन दयनीय बन जाता है। ऐसे लोग भी होते हैं जो ऐसी परिस्थितियों में आत्महत्या कर लेते हैं। यह सब आत्म-भ्रम के पापों के कारण है!

यदि मैं कहूँ कि कमाओ और धर्म से आचरण करो, तो क्या कोई सुनेगा? वे कमाते समय धर्म के बारे में नहीं सोचते। आपने कितना कमाया? लेकिन आपको यह कैसे मिला? मैंने वह नहीं देखा। इसलिए भगवान बुद्ध ने यह संदेश दिया। इसलिए, जब कोई पाप करता है, तो उसका परिणाम क्या होगा? जब आप इसका पूर्वाभास कर सकते हैं, तो आप वह पाप नहीं करते हैं।

उदाहरण के लिए, जब आप किसी को मारना चाहते हैं, तो आप कल्पना कर सकते हैं कि हत्या के बाद क्या होगा, यानी अगर आपको याद है कि पकड़ा जाना, जेल की सजा काटना, जेल जीवन की कठिनाइयाँ, वह खाना, बाकी समय चार दीवारी के अंदर अपना जीवन, जेल में दूसरों के साथ समस्याएं, सब मौज-मस्ती छोड़ कर, हर चीज से दूर होकर, अकेले रहकर, क्या तुम मारोगे? क्या तुम पाप करोगे? क्या तुम मर जाओगे? वह अपने आप को उसके पापों के लिए छोड़ देता है।

वह एक लड़की पर तेजाब डालना चाहता था क्योंकि वह उसे नहीं चाहती थी। लेकिन फिर उन्होंने परिणाम के बारे में ऐसा सोचा कि हर कोई मुझे डाटेंगे और मेरे साथ एक अपराधी की तरह व्यवहार करेंगे। बहुत अपमान सहना पड़ेगा। गलत काम करने वाला करार दिया जाएगा। पुलिस पकड़ लेगी। कड़ी सजा होगी। उसने किस इच्छा से ऐसा किया, उस इच्छा को पूरी तरह से खोना पड़ेगा। यदि आप इन सब बातों को याद रखेंगे तो आप वह गलती या पाप नहीं करेंगे।

इसलिए भगवान बुद्ध ने वह संदेश दिया।

एक मंत्री भी हैं। जो करोड़ों कमाना चाहता था। कमाई अच्छी होगी लेकिन पाप करना होगा। उसने सोचा यदि उसकी अवैधता का खुलासा हो जाता है, तो वह अपना पद खो देगा और हर कोई अपना पद खो देगा। उन्हें दण्डित किया जा सकता है। जेल में जीवन भर की सजा हो सकती है। वर्तमान यहूदा, सुख, नाम और प्रसिद्धि सब नष्ट हो जाएँगे। उस शर्म को सहना बहुत पीड़ादायक होता है। भले ही सब ऊपर-ऊपर सामान्य व्यवहार करते हों, लेकिन

अंदर ही अंदर वह सोचते हैं, डांटते-फटकारते हैं और समाज में बहिष्कृत हो जाते हैं। लोग परवाह नहीं करते, बहुत शर्म, असहनीय जीवन, यह सब यदि आप पहले सोचते हैं, तो आप वह गलती नहीं करेंगे, वह पाप नहीं करेंगे।

लेकिन अगर आप इस सब के बारे में नहीं सोचेंगे, तो आप भ्रष्टाचार करेंगे। कर्म के वजह से 'यदि आपको बुरा फल मिले! पता चला तो क्या होगा! अगर सजा मिली! वह सब अनुभव करके सोचता है, ऐसा काम न करता तो अच्छा होता, खुद के ही हाथों से ये सब किया। अब पचताने से कोई लाभ नहीं है। यह सब करने से पहले ही सोचना चाहिए।

इसलिए भगवान बुद्ध से ऐसा संदेश दिया गया। इसलिए कर्म के सिद्धांत को मत भूलिए। ऐसे दृश्य हम ज्यादातर फिल्मों में देखते हैं। इसके बाद क्या होगा? ऐसे सोचने से वह काम नहीं करेंगे। फिल्मों में कॉमेडी के लिए ऐसी चीजें दिखाई जाती हैं।

एक खलनायक का काम करने वाला भागने की कोशिश कर रहा है, लेकिन उसके बगल का साथी पैर रहित, आंखों वाला है।

अगर वे उसे दिखाएं और भागने की कोशिश करेंगे, तो वे उसका पैर काट देंगे। जब उन्होंने कहा कि अगर वह अपना पैर हटा दें तो उनकी क्या हालत होगी? वह तुरंत प्रयास करना बंद करने का साहस करता है। इस तरह के कई सीन हम फिल्मों में देखते हैं। इसलिए, जैसा कि भगवान बुद्ध ने कहा, यदि आप उस पाप को करने से पहले उसका परिणाम देख सकते हैं, तो आप वह पाप नहीं करेंगे।



जीसस क्रैस्ट

जो बोओगे वही काटोगे।

मतलब 'जैसे कर्म करेंगे वैसे ही फल प्राप्त करेंगे'।

हम इस धरती पर जो बीज बोयेंगे वही काटेंगे।

आम का बीज बोओगे तो आम पैदा होगा। नीम का बीज बोयेंगे तो नीम उगेगा। इसके अलावा, अगर आप चावल

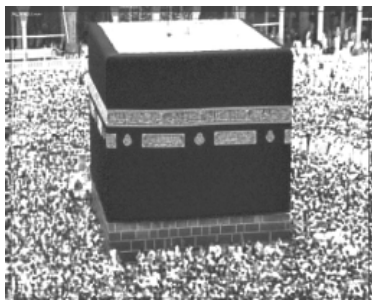
के बीज बोते हैं, तो चावल उगेंगे। यदि घास का बीज बोया जाए तो घास उगेगी। इस सृष्टि में यही व्यवस्था है। इसके अलावा, यदि आप नीम के बीज बोते हैं, तो आप आम नहीं काट सकते। यदि घास के बीज लगाए जाते हैं, तो चावल की फसल नहीं काटी जा सकती है।

साथ ही इस सृष्टि में जो भी कर्म किया जाता है, वैसा ही फल भोगना चाहिए। यदि आप जीवन में सुख का बीज बोते हैं, तो आप सुख की फसल काटेंगे। यदि आप हिंसा करते हैं, तो आप हिंसा का बीज बोते हैं।

वे हिंसा की फसल काटते हैं। जीसस संदेश दे रहे थे कि अगर तुम जानवरों और पक्षियों को सताओगे तो तुम बीमारियों से पीड़ित होगे।

तो अगर हम फसल चाहते हैं तो हम ऐसा बीज कैसे लगा सकते हैं! यदि आप जीवन में कोई परिणाम चाहते हैं तो आपको ऐसा कर्म करना चाहिए। बस इतना ही, यदि आप एक प्रकार का कर्म करते हैं और दूसरे प्रकार का फल चाहते हैं, तो यह काम नहीं करता, आप प्रार्थना भी करते हैं, तो यह बेकार है। इसलिए कर्म करते समय विचार करना चाहिए। हम ऐसे कर्म करने चाहिए जो हम चाहते हैं कि हमारा भविष्य हो।

लेकिन संसार में करना एक बात है, चाहना दूसरी। हिंसा करके सुख चाहते हैं। चाहो तो भी आनंद कैसे उपलब्ध होते हैं? हिंसा को ही बोया गया है। इसलिये बीज बोने के समय में ही सोचकर बोना चाहिए, अर्थात् कर्म करते समय विचार करना होगा। यही यीशु का संदेश है।



मुहम्मद पैगंबर

मुहम्मद पैगंबर कहते हैं यह ऐसा लोक है, जहां कल के लिए अर्थात् भविष्य के लिए फसल उगायी जाने का क्षेत्र है।

मुहम्मद के व्यवहार ने इस दुनिया की तुलना फसलों के खेत से की। हम खेत में फसल काटते हैं। किसलिए यानी भविष्य की जरूरतों के लिए, भविष्य की

जरूरतों को ध्यान में रखकर वर्तमान बोया जाता है। इस प्रकार खेत हमारी भविष्य की जरूरतों को पूरा करेगा। इसके अलावा, अगर हम किसी भी तरह की फसल चाहते हैं तो हम ऐसे बीजों को खेत में बो देते हैं। हम ऐसी फसल उगाते हैं। इसके अलावा, खेत में किसी भी प्रकार का बीज लगाया जा सकता है। खेत ऐसी फसल देता है। खेत से मनचाही फसल मिलने की संभावना है।

साथ ही इस दुनिया में हम जो चाहें पा सकते हैं। सुख चाहो तो पा सकते हैं। यदि आप शांति चाहते हैं, तो आप शांति पा सकते हैं। अगर आप प्यार चाहते हैं, तो आप प्यार पा सकते हैं। यदि आप सम्मान चाहते हैं, तो आप सम्मान प्राप्त कर सकते हैं। धन चाहो तो धन मिल सकता है। यदि आप भोग चाहते हैं, तो आप भोग प्राप्त कर सकते हैं। इस दुनिया में ऐसा अवसर मौजूद है। इस संसार में किसी भी प्रकार का जीवन उसी प्रकार प्राप्त किया जा सकता है जिस प्रकार खेत से कोई भी फसल प्राप्त की जा सकती है। खेत में बोना चाहिए लेकिन इस लोक में करना पड़ता है।

हम इस दुनिया में जो चाहते हैं वही हम पा सकते हैं। अच्छा करो तो अच्छा... बुरा करो तो बुरा। जैसे आनंद, शांति, प्रेम, सम्मान, धन, भोग... ऐसे कुछ भी पा सकते हैं और अगर हम अपमान करेंगे तो हमारी बेइज्जती होगी। हम आलोचना करेंगे तो हमारी आलोचना होगी। नष्ट किया तो नष्टता ही मिलेगी। इस दुनिया में यही व्यवस्था है, इसलिए ऐसा कहा गया है कि 'जितना करते हैं, उतना ही मिलेगा।

तो यह मत समझना कि मुझे इस दुनिया में नहीं मिला। इस संसार में कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है। मनुष्य इस संसार से कुछ भी प्राप्त कर सकता है जैसे कोई भी फसल खेत से प्राप्त कर सकती है। हम अपने भविष्य के लिए खेत का उपयोग कैसे कर सकते हैं? वो भी कल के लिए यानि हमारे भविष्य के लिए दुनिया का उपयोग किया जा सकता है। यह पैगंबर मुहम्मद का संदेश है।



ऋषि वशिष्ठः

“आप हुजैसे काम करेंगे वैसे ही फल भोगेंगे। इसलिये किए गए कर्म के अलावा कोई भगवान या प्रारब्ध नहीं है।”

ऋषि वशिष्ठ ने कर्म सिद्धांत के बारे में भी बताया। स्वाभाविक रूप से कोई सोचता है कि उसके जीवन में जो कुछ भी होता है उसके लिए भगवान जिम्मेदार है। यदि कुछ अच्छा होता है, यदि लाभ होता है, यदि एक साथ हो जाता है, तो इसे तुरंत भगवान की कृपा

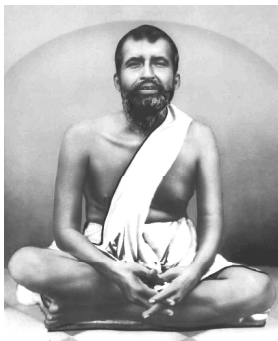
के कारण कहा जाता है। आप कैसे हैं इसका मतलब है कि मैं भगवान की कृपा से ऐसा हूँ। साथ ही, यदि वे एक साथ नहीं आते हैं, यदि कोई लाभ नहीं होता है, यदि अच्छी चीजें नहीं होती हैं, तो कहा जाता है कि भगवान की कृपा तुरंत नहीं हुई। उसके जीवन में जो कुछ भी होता है, वह सोचता है कि उसके लिए ईश्वर जिम्मेदार है।

इसलिए दुनिया में देवता पूजा, प्रार्थना और नमाज करना ऐसे काम कर रहे हैं। लेकिन आप सोचते हैं की वरिष्ठों के कर्मों का फल भोग रहे हैं। लेकिन वशिष्ठ कहते हैं कि आप खुद के कर्मों को भोग रहे हैं। चाहे आपके साथ अच्छी चीजें हों, चाहे आप लाभ प्राप्त करें यह आपके द्वारा पूर्व में किए गए अच्छे कर्मों का परिणाम है, इसमें भगवान की कोई भागीदारी नहीं है। इसलिए कहा जाता है कि आपकी करणी आपके लिए दिव्य है।

साथ ही यदि बहुत से लोगों के जीवन में कठिनाइयाँ आ रही हों, स्थिति में कोई परिवर्तन न हो रहा हो, तो मेरा प्रारब्ध ऐसा ही है। मुझे क्या करना चाहिए? ऐसे कहते हैं।

कहा जाता है इसका अर्थ वह सोचता है कि प्रारब्ध के कारण उसका जीवन ऐसा है। लेकिन वशिष्ठ जी कह रहे हैं कि आपके द्वारा किए गए कर्मों को अनुभव करने के लिए आपको जो कर्म मिले हैं, वही आपका प्रारब्ध होगा। इसलिए कहा जाता है कि आपके कर्म के अलावा और कुछ नहीं है। इसलिए “वह जो कुछ करेगा, उसे उसका फल मिलेगा” ऐसा कर्म सिद्धांत के बारे में कहा गया।

श्री रामकृष्ण परमहंस



‘हम जो भी कर्म करते हैं उसका फल भोगना ही पड़ता है’ ऐसे कहते हैं- ‘मिर्च खाओगे तो मुँह जलेगा, लेकिन चीनी खाओगे तो मुँह मीठा होगा न?’

कर्म का फल अवश्य मिलेगा। केवल यही नहीं, कर्म के फल का अनुभव होना ही चाहिए। वेशक श्री रामकृष्ण परमहंस ने कर्म सिद्धांत के बारे में बिल्कुल ठीक ही कहा है। मिर्च खाओगे तो मुँह जलेगा और चीनी खाओगे तो मुँह मीठा होगा न? कर्म का फल दिखेगा न? उदाहरण भी दिया है। इसके अनुसार, यदि आप बुराई करते हैं, तो आपको भुगतना पड़ेगा और अच्छा करने से खुशी मिलेगी इसका पता होना चाहिए।

गुरु नानक

गुरु नानक ने कहा, ‘मैंने जितना किया है, उतना ही अनुभव किया किसी के बारे में सोचने का कोई मतलब नहीं है।’

गुरु नानक ने भी कर्म सिद्धांत को एक अलग कोन में समझाया। स्वाभाविक रूप से, अगर किसी का जीवन ठीक नहीं है तो वे किसी और को दोष देते हैं।

वे आपको दोष देते हैं कि मेरे जीवन में ऐसा क्यों है। कुछ बच्चे अपने



माता-पिता को दोष देते हैं। तुम्हारे जन्म से मेरी ऐसी दशा है। आपने कुछ नहीं कमाया। मुझे कुछ नहीं दिया। मेरी पढ़ाई ठीक से नहीं हुई। मेरे लिए कोई व्यापार का इस्तमाल नहीं किया गया.. 'उनके पिता को देखना- कितना अच्छा कमाया है। उनको कितना अच्छा पढ़ाई दिया है।' ऐसे सोच कर माता पिता को गालियां देते होंगे।

लेकिन बच्चों का जीवन ऐसा क्यों होता है इसका कारण उनके पिछले कर्म हैं। वे ऐसे माता-पिता से पैदा हुए हैं क्योंकि उन्हें उन कर्मों का भोग करना है। अन्यथा, वे अमीर माता-पिता के घर पैदा होते थे।

साथ ही, कुछ पत्नियां अपने पतियों को दोष देती हैं। मेरी जिंदगी तुम्हारी वजह से ऐसी है। उस आदमी को देखो, वह अपनी पत्नी को गाड़ी में बिठाता है, उसने एक अच्छी इमारत बनाई है, इतने सारे गहने खरीदे हैं, तुमने क्या किया? मेरा जीवन यह आपकी वजह से है। वे ऐसा दोष देते हैं।

कुछ पति पत्नियों को दोष देते हैं। तुम्हारी कारण ही मेरी यह दशा है। उनसे ब्याह करता तो कितना दहेज आता था ? कितनी संपत्ति मिलती थी? अलग-अलग रूप से पत्नियों को दोष देते हैं।

साथ ही उसे अपने कर्मों के कारण से ही ऐसा पति मिला है। नहीं तो दूसरा पति मिल जाता। उसे अपने कर्मों के कारण ऐसी पत्नी मिली। नहीं तो उसे दूसरी पत्नी मिल जाती। इसलिए गुरु नानक ने कहा कि किसी और को दोष देने का कोई मतलब नहीं है।

बहुत से लोग यदि उनका जीवन अच्छा नहीं हो तो, किसी और को दोष देते हैं लेकिन गुरु नानक ने कहा कि यह आपके कर्मों का परिणाम है।

आप जो कर रहे हैं उसके लिए किसी और को दोष क्यों दें? इसका कोई फायदा नहीं होता है।

यह न जानते हुए भी कई लोग माता-पिता को दोष देते हैं। तो अब दोष दे रहे हैं, लेकिन पिछले जन्म में क्यों नहीं दिया? तब दूसरों को देना कठिन था और यदि आप इसे नहीं देना चाहते हैं, तो हमारा पसंद का कैसे आएगा? ऐसा कैसे यदि आप उन माता-पिता को नहीं आने का दोष देंगे, तो वे क्या करेंगे? उन्होंने जो किया उसके कारण ही आपको जन्म मिला।

उनके माता-पिता को तदनुसार ही दिया गया था। तब बोया नहीं तो इस जन्म में फसल कैसे आएगी? यदि आप अपने माता-पिता को आने के लिए और कुछ नहीं होने के लिए दोष देते हैं, तो आपका पाप बढ़ जाएगा और कोई फायदा नहीं होगा। इसलिए पैगंबर मुहम्मद ने कहा कि यह संसार एक ऐसा खेत है जहां कल यानी अगले जन्म के लिए फसलें उगाई जाती हैं।

तो अब कम से कम लगाओ, जो चाहो दे दो। जो लोग अमीर बनना चाहते हैं उन्हें पैसा बांटना होगा! दान देना होगा! जान लें कि अपने जीवन के लिए किसी और को दोष देने का कोई मतलब नहीं है। यही नानक का संदेश है।

इसलिए अब कर्म उसी के अनुसार करें जो आप चाहते हैं कि आपका भविष्य कैसा हो। अगर आप भविष्य में अमीर बनना चाहते हैं तो अपने पैसों में से कुछ हिस्सा बांट लें। अगर आप प्यार पाना चाहते हैं, तो अपनी पत्नी और पति के साथ प्यार से पेश आएं।

‘राधास्वामी’

‘यदि आप कर्म करते हैं, तो आपको इसका अनुभव करना होगा’।

राधास्वामी ने कर्म के सिद्धांत को दूसरे रूप में समझाया। उनका कहना है कि जो कोई भी किसी भी प्रकार का कर्म करता है उसे ऐसा ही अनुभव प्राप्त करना होता है।



ऐसा अनुभव होता है यदि आप दूसरों और अन्य जीवित प्राणियों पर कोई हिंसा करते हैं तो उसी प्रकार का अनुभव प्राप्त करना पड़ता है। जैसा दूसरों को हम नरकीय अनुभव दिखाएंगे वैसा ही अनुभव प्राप्त होगा। दर्द का कारण बनेगा तो दर्द का अनुभव मिलेगा। इसका मतलब है कि इसी तरह की पीड़ा का अनुभव करना है। कहा गया है कि इस सृष्टि का यही सिद्धांत है।

उदाहरण के लिए, किसी के पास बहुत पैसा है। एक भूखे भिखारी ने उनसे कुछ मांगा। लेकिन वह अमीर आदमी उस भिखारी को जाने के लिए कहता है क्योंकि उस अमीर आदमी को भूख का अनुभव कैसे होता है यह नहीं पता। ऐसे लोग अगले जन्म में भिखारी बनने को विवश होते हैं। उन्हें जीवन भर भूखा रहना पड़ेगा। तब उन्हें अनुभव होगा कि भूख की पीड़ा कितनी पीड़ादायी होती है। उस अनुभव के कारण वह पुनर्जन्म में कोई कुछ मांगे तो तुरंत दे देते हैं।

इससे पहले बिना अनुभव के कारण उस आदमी को खाली हाथ भेजा था। जब अनुभव हुआ, तब दे रहा है। इसलिए राधास्वामी ने कहा कि वह जो भी कर्म करता है, उसे ऐसे अनुभव प्राप्त करने होते हैं।

यदि किसी का हाथ काटा जाता है, तो उसे हाथ न होने का अनुभव करना पड़ता है। यदि आप अपनी आँखें निकालते हैं, तो आपको अंधापन का अनुभव करना होगा। यदि आप सफल होते हैं, तो आपको नुकसान का अनुभव करना होगा। यदि आप अपनी पत्नी को प्रताड़ित करते हैं, तो आपको इसे पत्नी के रूप में अनुभव करना होगा।

इस तरह सृष्टि में गलतियाँ और पाप हुए। उन गलतियों और पापों को अनुभवों के द्वारा सुधारा जाना चाहिए। ऐसी हरकतें फिर से न करने के लिए, किसी को नुकसान न पहुँचाने के लिए अनुभव प्राप्त करना चाहिए। अनुभव के बिना कोई बदलाव नहीं होगा। गलतियाँ करना बंद न करें तो हर जन्म के अनुभवों से कुछ सबक सीखे जाते हैं।

इस सृष्टि के 'कर्म सिद्धांत' के उद्देश्य को राधास्वामी ने समझाया।

राधास्वामी द्वारा दिए गए संदेश के अनुसार हमें बहुत कुछ जानना चाहिए, सोचना चाहिए, और सीखना चाहिए। जीवन में सीखने के लिए बहुत कुछ है।

क्या कर्म केवल मनुष्यों के लिए है? क्या यह जानवरों पर भी लागू होते है?

स्वाभाविक रूप से कर्म का अर्थ है गलतियाँ और पाप केवल मनुष्य के मामले में किए जाते हैं। यह जानवरों पर लागू नहीं होता है। कई लोगों में यह भावना है कि जानवरों के साथ जो कुछ भी मनुष्यों के द्वारा किया जाता है वह ठीक है। इसका अर्थ यह है कि पशु-पक्षियों को चोट पहुँचाई जाए, प्रताड़ित किया जाए, मार डाला जाए और खाया जाए तो कोई बात नहीं है। वे सोचते हैं कि यह कोई पाप नहीं है।

लेकिन सृष्टि में सभी प्राणी समान हैं। यानी हर जीव एक है। कारण ईश्वर प्रत्येक प्राणी के जीने का सचेतन कारण है। इसी चेतना से सभी जीवों का निर्माण होता है। सब आगे बढ़ रहे हैं। इसलिए सभी भगवान के रूप हैं। इसलिए 'कर्म का सिद्धांत'। यह किसी भी जीवित वस्तु पर लागू होता है। अंत में, चींटियों और मच्छरों पर भी यही बात लागू होता है। लेकिन छोटे जीवों के मामले में पाप की गंभीरता कम होती है। बड़े पशुओं के मामले में रोग की गंभीरता अधिक होती है। इंसानों के मामले में तो और भी ज्यादा होती है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि जानवर सामूहिक आत्माएं हैं, जबकि मनुष्य एकात्मा हैं। ऐसे ही वृक्ष एक भूत तत्व से बने हैं। रोगाणु और कीट द्विभूत तत्व से बने हैं। पक्षी त्रिभूत तत्व से बने हैं। जानवरों को चार भूत तत्व होते हैं। सृष्टि और विकास के क्रम में जीवों की प्रगति और वृद्धि इसी क्रम में होती है और अंत में वे मनुष्य के स्तर तक पहुँचते हैं। इसलिए, मनुष्य सभी जीवित प्राणियों में अद्वितीय है। इसके अलावा यह नहीं भूलना चाहिए कि सभी एक हैं और सभी ईश्वर के रूप हैं।

एक तरह से, 'मनुष्य मतलब सृष्टि' में विकसित हुआ जानवर है वैसे ही जानवर मतलब विकसित होनेवाला मनुष्य है। इसका मतलब है कि पहले का जंतु ही आज का मानव हैं। जानवर का मतलब आनेवाला मानव ही है। इसलिए सब कुछ एक है, इसलिए 'कर्म सिद्धांत' सभी प्राणियों पर लागू होता है। जो कोई भी जीव के मामले में हिंसा या पाप करता है उसे भोगना ही पड़ता है। अनुभव प्राप्त करना ही चाहिए।

अगर हम समाज में देखें तो बहुत से लोग कई तरह से पीड़ित हैं। वे कठिनाइयों का अनुभव कर रहे हैं, वे नरक का अनुभव कर रहे हैं। यह देखा जा सकता है कि आग लगने की विभिन्न दुर्घटनाओं में कई लोग झुलस जाते हैं। शरीर भी जलता है। ऐसे जलने से मरने वाले भी हैं। दीपावली पर आंसू बहाने वाले, दवाइयां जलाने वाले लोग हैं। वहीं कुछ लोग हैं जो खाना बनाते समय गैस दुर्घटना में झुलस गए, वे हैं जिनके शरीर उनके ससुराल में जलाए गए थे, और वे जिन्हें मिट्टी की तेल से गोली मार दी गई थी। जिन्हें एसिड अटैक कर जला दिया गया है। वहां हैं बिजली के शॉर्ट सर्किट की वजह से घरों में और आग में झुलसकर लोगों की मौत हो गई है। ऐसे लोग हैं जो बसों के जलने से, ट्रेन के डिब्बों के जलने से, हवाई जहाजों के जलने से मारे गए। युद्धों में बमबारी से गाँव नष्ट हो जाते हैं। कितने लोग नहीं जले और मर गए।

अगर हम ऐसा सोचें तो दुनिया में जल गये शरीरवालों को कई हजारों और लाखों में देख सकते हैं। तो वे सब नरक का अनुभव कर रहे हैं! उनके साथ जो हुआ उसके कारण उनके परिवार परोक्ष रूप से कितना कष्ट उठा रहे हैं? और ऐसा क्यों होता है?

सोचना? उन सबने क्या किया? इतने दर्द का अनुभव क्यों? गलती न करने की इतनी सजा?

न्यायिक पदों में, 'दोषियों को दंडित नहीं किए जाने पर भी निर्दोषों को दंडित नहीं किया जाना चाहिए!' और दयालु परमेश्वर इतनी भयानक सजा क्यों

दे रहा है? जिन पर हमें विश्वास है, वही भगवान क्यों नरक दिखा रहे हैं? दयालु परमेश्वर दया क्यों नहीं दिखा रहा है? क्या भगवान इतना क्रूर है? यदि आप इसके बारे में सोचते हैं तो यह सब भ्रमित करने वाला है। इसका कोई मतलब नहीं है। ऐसा क्यों होता है? क्या आपको लगता है कि इंसानों में कुछ भी गलत नहीं है? क्या मनुष्य कोई गलती और पाप नहीं करते हैं? क्या मनुष्य निर्दोष है? कुछ नहीं जानते? क्या भगवान परेशानी पैदा कर रहा है? क्या ईश्वर को दया नहीं है? सोचिये।

क्या दुनिया भर में कई पक्षियों और जानवरों को भोजन के लिए प्रताड़ित नहीं किया जा रहा है? क्या उन्हें जलाया नहीं जा रहा है? क्या उन्हें मारा नहीं जा रहा है? आपको क्यों नहीं लगता कि यह उन्हीं का परिणाम है? यदि यह कारण नहीं है तो क्या कारण है? अनावश्यक कुछ नहीं होगा? जब पशु-पक्षियों को जलाना गलत नहीं है तो जले हुए लोगों का क्या कारण हैं? सोचना चाहिए।

राधास्वामी जैसे महान, ज्ञानी, देवतुल्य लोग ऐसा नहीं कहते हैं ना? क्या उनकी बातों में कोई सच्चाई है? उन्होंने जो कहा उसके बारे में सोचना नहीं चाहते हैं? क्या आपको उनके संदेश का अर्थ जानने की आवश्यकता नहीं है? इसलिए बड़ों द्वारा दिए गए संदेशों का सार जानना चाहिए।

देखिए दुनिया भर के बम्बई, दिल्ली और कलकत्ता जैसे बड़े शहरों में रेड लाइट एरिया में कितनी लाख महिलाएँ वेश्यावृत्ति में लिप्त हैं? प्रजा के सुख के लिए, व्यापारियों के लाभ के लिए जिनका लक्ष्य धन है, सुख के लिए ये सभी नारियाँ जीवन भर बिना हवा और प्रकाश के कमरों में कैद रहती हैं! ये महिलाएँ कुछ लोगों की खातिर जिंदगी भर आजादी खोती जा रही हैं। बाहर की दुनिया को जाने बिना जीना! निर्वाहक भी उन्हें खरीद रहे हैं, जैसे पशु को बाज़ार में खरीदेगें वैसे। जैसे पक्षियों को मनोरंजन के लिए पिंजरों में रखना। इन महिलाओं को बगल के कमरों में बंद कर दिया जाता है जैसे कुत्तों को छोटे

पिंजरों में बांध दिया जाता है और मछलियों को छोटे टैंकों में रखा जाता है। ध्यान दें कि जानवरों को मालिक जो कुछ भी डालता है उसे खाना पड़ता है। जैसे कहेंगे वैसे करना पड़ता है। इन सभी महिलाओं के साथ जो इंसान हैं, प्रबंधकों द्वारा ऐसा व्यवहार किया जाता है! क्या वे अपना पूरा जीवन बिना स्वतंत्रता के दूसरों को खुश करने के लिए जीने को मजबूर हैं? उन्हें ऐसा जीवन क्यों मिला? गुलाम क्यों? यह नरक क्यों? सोचने पर भी समझ में नहीं आएगा।

इतना ही नहीं पूरी दुनिया में कई महिलाएं घोषा के नाम से अपने घरों में रह रही हैं। इतना ही नहीं क्या ज्यादातर पुरुष महिलाओं को सिर्फ अपने आनंद के लिए नहीं देखते हैं? कितनी महिलाओं को वास्तव में पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है? सोचना? कितनी महिलाएं बाहर की दुनिया को नहीं जानती हैं। उनका ऐसा जीवन क्यों है? इसके बारे में सोचो।

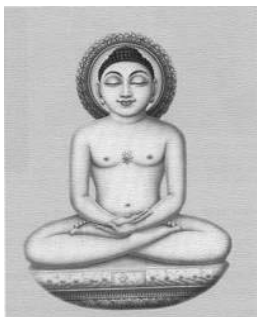
यह भी ध्यान दें। पूरी दुनिया में बहुत से लोग नपुंसक के रूप में पैदा होते हैं। जैसे गायों, सूअरों और अन्य जानवरों के अंडकोष काटे जाते हैं, वैसे ही कुछ लोगों का अंडकोष जबरदस्ती से काटकर उन्हें नपुंसक के रूप में बदला जा रहा है।

कई लोग गर्भ धारण करने में विफल होकर बहुत पीड़ित हो रहे हैं शायद इसका कारण उन्होंने बच्चे के रूप में परिवर्तन होनेवाले जानवर के अंडे को, अंडे की दशा में ही खा रहे हैं।

अगर हम ऐसे देखेंगे तो एक तरफ कर्म करने वाले दिख रहे हैं और दूसरी तरफ ऐसा ही दर्द से पीड़ित होने वाले भी दिख रहे हैं..दुनिया में ऐसी हालत क्यों है? कुछ लोग गलती करते रहते हैं तो कुछ लोग कर्म भोगते रहते हैं। एक गलत कर रहा है तो दूसरा क्यों अनुभव कर रहा है? हम इसे खुद कहते हैं ना, गलत करने वाले को ही सजा मिलनी चाहिए।

क्या परमेश्वर यह नहीं जानता? क्या परमेश्वर की सृष्टि में न्याय और धार्मिकता नहीं है? क्या ईश्वर इतना निर्दयी है? यदि आप गहराई से सोचेंगे, तो आपको यह सब समझ में आ जाएगा, 'ईश्वर की सृष्टि में सब कुछ उचित है। अन्याय नहीं है।' भगवान के फैसले! अर्थात्, पृथ्वी पर आए देवता और ऋषि हमें बताते हैं कि सृष्टि में क्या होता है, सृष्टि के सिद्धांत और सृष्टि के गुण क्या हैं।

तो आइए समझते हैं बुजुर्गों ने क्या कहा। आइए उनके संदेशों को अमल में लाएं। आइए सृष्टि के सिद्धांत, 'कर्म के सिद्धांत' को अमल में लाएं। आइए हम अपने कर्मों से अपने जीवन को सुधारें। हम सब सुख से जियें। हम भी सुख से जियें।



आइए महावीर के संदेश जियो और जीने दो को अमल में लाएं। दुनिया कैसी है? इसे कौन पसंद करता है? उनकी परेशानी किसकी है? किसी की इच्छा को कौन नकार सकता है? कौन किसी की समस्या का समाधान कर सकता है?

किसी को हम क्या कह सकते हैं? कोई अनुभव ही बताना चाहिए। वही राधास्वामी का संदेश है।

कबीर

‘जो कोई भी कर्मों को महसूस करता है’ कहता है ‘जो हाथ कर्म करता है, वह हाथ कर्मों को महसूस करता है’।

कर्म वे हैं जिन्होंने यह सृष्टि की है। इसे अनुभव करना होता है। इसके अलावा, एक के द्वारा किए गए कार्यों को दूसरे द्वारा अनुभव नहीं किया जाएगा। इतना ही नहीं। जो कुछ भी एक दूसरे के लिए करता है,



परिणाम उसी का होता है जिसने ऐसा किया। लेकिन जिनके लिए यह किया जाता है, वह परिणाम नहीं बनता, संक्रमित नहीं करता। कबीर के संदेश का यही अर्थ है।

स्वाभाविक रूप से जब दुनिया में किसी की मृत्यु होती है, यानी बच्चे, माता-पिता, पत्नी या पति, तो उनकी याद में कुछ दान और सेवाएं की जाती हैं। ऐसा करने से उन्हें लगता है कि परिणाम उनका है।

मृत होने पर संस्कार भी किए जाते हैं। उस अवसर पर वे अपनी शक्ति के अनुसार विभिन्न दान करते हैं। ऐसा करने से, यह माना जाता है कि दान के परिणाम से मृतकों को लाभ होगा, और उच्च लोकों तक पहुंचेगा।

लेकिन कबीर का संदेश है कि कोई भी कर्म, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, पुण्य हो या पाप, उसे करने वाले को भोगना ही पड़ता है। लेकिन उन्हें यह महसूस नहीं होता कि यह किसके लिए किया गया है। उस कर्म का फल उसी का होता है जिसने उसे किया है। लेकिन यह उनका नहीं है जिनके लिए इसे बनाया गया है।

पुराणों में भी हमें यही बताया गया है। वाल्मीकि लूटपाट और हत्याएं करते थे। जब एक बार नारद महर्षि का वाल्मीकि से सामना हुआ तो आप ये हत्याएं और पाप क्यों कर रहे हैं? उन्होंने पूछा। तब वाल्मीकि ने कहा कि मैं यह अपनी पत्नी के लिए कर रहा हूं, अपनी पत्नी के भरण-पोषण करने के लिए। तो फिर तुम ये सब पाप अपनी पत्नी के लिए कर रहे हो न? नारद को हंसी आ गई। आपकी पत्नी साझा करती है और अनुभव करती है। उससे पूछो कि क्या वह तुम्हारे किसी पाप में भागीदार होगी?’

वह तुरंत वाल्मीकि अपने पत्नी के पास गया और इस विषय को पूछा। तुम्हारे पाप से मेरा क्या संबंध है? तुम कुछ ला रहे हो और मैं उसका अनुभव कर रही हूं। क्या मैंने पाप करने के लिए तुम से बोला? उसने कहा। वाल्मीकि तुरंत नारद के पास गए और उनके पैरों पर गिर पड़े और नारद से कहा कि मुझे सिखाओ कि अब क्या करना है।

ऐसे नारद के बोधन से किरातक जैसे वाल्मीकि महर्षि बन गये और रामायण लिखा। इसके अनुसार जिसने भी कर्म किये हैं उसका फल उसी का है किसी और का नहीं। यही कबीर का संदेश है।

इसलिए, यदि कोई पाप करता है और पूरे विश्व को खिलाने के लिए अधर्म कमाता है, तो दुनिया में सभी उस कमायी से खुश होंगे, लेकिन पाप करने वाले को ही कष्ट भोगना होगा। उस पाप का फल उसे जन्म-जन्मान्तर सताता रहता है। इससे कमाई के लिए पाप नहीं करना चाहिए।

इसका अर्थ है पाप न करना। मेरे पिता को मार डाला, मेरे पिता का पैर काट दिया, मेरे पिता के साथ बुरा अन्याय किया, गलत व्यक्ति को मार डाला, अत्याचार किया, उसने जो किया उसके बदले में कुछ करने पर उसे उस पाप का फल भुगतना पड़ेगा। स्वाभाविक रूप से, हम समाज में देख रहे हैं कि मेरी पत्नी और मेरी बेटी के साथ हुए अन्याय के बदले में वे कुछ कर रहे हैं। परन्तु सृष्टि में कर्म के सिद्धांत के अनुसार यह ज्ञात होना चाहिए कि जिसने किसी के लिए किया है उसे उसका भोग करना ही होगा।

साथ ही कई लोग वारिसों के लिए संपत्ति जमा करते हैं और जमा करके वारिसों को दे देते हैं। वे बिना कोई पुण्य कर्म किए ही मर जाएंगे। वह धन वारिसों का है। यदि वे उत्तराधिकारी उस धन का उपयोग पुण्य कार्यों में करते हैं, तो जिसने यहाँ परिश्रम किया है और धन कमाया है, उसको कोई फल नहीं मिलेगा। लेकिन पुण्य केवल दाता के उत्तराधिकारी को ही मिलता है।

इसलिए, यदि कोई अपने विचार में से बहुत से पवित्र कार्यों और सांसारिक अच्छे कार्यों के लिए खर्च करता है, तो वह परिणाम उसे विरासत में मिलेगा। इसके अलावा, यह ज्ञात होना चाहिए कि कितना भी धन अर्जित किया जाए और संचित किया जाए और उत्तराधिकारियों को दिया जाए, उनको कोई परिणाम नहीं होगा। इसलिए जो आपके पास है उसे थोड़ा निकाल के लोककल्याण के लिए विनियोग करें।

सृष्टि के इसी सिद्धांत को ही कबीर ने बताया है।



गुरु साहब

1) कर्म का सिद्धांत प्रकृति का अपरिवर्तनीय शाश्वत नियम है जो व्यक्तिगत और आध्यात्मिक जीवन की नींव है।

2) दिनरात मनुष्य से जो कुछ किया जाता है वही उसके ललाट में लिखा जाएगा।

एक देश में कानून का पालन कैसे करते हैं और उस देश की प्रजा कैसे उस कानून का पालन करती हैं, उसी तरह ईश्वर की रचना भी कुछ कानूनों के द्वारा शासित होती है।

इस सृष्टि का प्रत्येक प्राणी उन नियमों और कानूनों के अधीन है। गुरु साहब कहते हैं कि प्रकृति के ऐसे नियमों में 'कर्मसिद्धांत' एक अपरिवर्तनीय और शाश्वत नियम है।

इसलिए इस सृष्टि में रहने वाले हम मनुष्यों को 'कर्म का सिद्धांत' नामक नियम के अनुसार जीना चाहिए। 'कर्मसिद्धांत' के नियम की अवहेलना या हल्के में नहीं लेनी चाहिए। अर्थात् मनचाहा कर्म नहीं करना चाहिए। यानी आपको ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए। यदि आप ऐसा सोचते हैं और कर्म करते हैं, तो आपको सृष्टि के 'कर्म सिद्धांत' के अनुसार परिणाम भोगने होंगे।

एक राष्ट्र एक संविधान द्वारा... एक दृश्यमान सरकार द्वारा कैसे शासित होता है? यह सृष्टि भी कुछ नियमों और सिद्धांतों का पालन करते हुए एक अनदेखी शक्ति (ईश्वर) द्वारा निर्देशित है। जैसे कुकर्मी को देश के कानून के अनुसार दण्ड दिया जाता है, वैसे ही पापी को प्रकृति के इस नियम के अनुसार दण्ड दिया जाता है। दंडित भी किया जाएगा। यानी उसे कष्ट भी होगा।

गुरु साहब कहते हैं कि किसी देश के कानून बदल सकते हैं लेकिन

प्रकृति का कानून नहीं।

उन्होंने यह भी कहा कि कर्म सिद्धांत के अनुसार जो कोई भी कर्म करता है उसके माथे पर लिखा होता है। बहुत से लोग सोचते हैं कि हमारे लेखन का अर्थ भगवान यानी ब्रह्मा ने लिखा है। ऐसा माना जाता है कि जीवन हमारे सामने ब्रह्मा द्वारा लिखे गए लेखन के अनुसार है। इसलिए मेरा लेखन ऐसा है। लेकिन गुरु साहिब जो कहते हैं वह यह है कि हमारे कर्म हमारे माथे पर लिखे होते हैं।

इसका अर्थ है कि हम जो भी कर्म करते हैं वह इस सृष्टि में दर्ज है। यानी हमारे द्वारा की जाने वाली हर क्रिया और हर शब्द को दिन और रात रिकॉर्ड किया जाता है। भले ही आप अकेले हों, किसी गुफा में हों, भले ही आप बिना किसी को देखे कमरे का दरवाजा बंद कर दें, आपके कार्यों, शब्दों और कर्मों को दर्ज किया जाएगा। यानी हम जान सकते हैं कि प्रकृति कितनी शक्तिशाली है। इसलिए प्रकृति की शक्ति को कम मत समझो। हम प्रकृति की शक्ति की कल्पना कर सकते हैं यदि हम भूल जाएं कि हमने कुछ दिनों में क्या किया है और कितने करोड़ जीवों के कर्म दर्ज हैं। न केवल रिकॉर्ड दर्ज किया जाता है, बल्कि समय के संदर्भ को सही करने के बाद परिणाम भी दिया जाता है। इस अवसर पर हमें जो जानने की जरूरत है वह यह है कि हम अपने लेखन और कर्मों के माध्यम से खुद को लिख रहे हैं। हमें पता होना चाहिए कि हमारा लेखन कोई और नहीं लिख रहा है।

यानी हमें पता होना चाहिए कि हमारा जीवन हमारे हाथ में है। यही गुरु साहब का संदेश है इसलिए किसी को दोष मत दो कि हमारा जीवन ऐसा है। कम से कम अभी से हमें अपने हाथ सीधे करने होंगे। व्यवहार बदलना होगा। हमारा भविष्य कैसा है?

यदि आप वहां रहना चाहते हैं, तो आपको उसके अनुसार कर्म करना चाहिए।

महाज्ञानी सहजोबाई

पशु, पक्षी, नर, सुर, असुर, जलीय जंतु और कीट सभी अपने किए कर्मों का भोग करते हैं।

उपरोक्त संदेश से यह ज्ञात होना चाहिए कि 'कर्म सिद्धांत' इस सृष्टि के प्रत्येक प्राणी पर लागू होता है। कोई जीव कर्म के सिद्धांत से नहीं बचता। हर प्राणी कर्म का अनुभव करता है। महाज्ञानी सहजोबाई के संदेश के अनुसार हमारा जीवन हमारे पिछले कर्मों पर निर्भर करता है।

इसलिए, अनुष्ठान करते समय बहुत सावधानी बरतनी चाहिए। सोच कर हानिकारक कर्म न करें। कर्मफल जो लाभ लाता है उसे करना चाहिए।

‘कन्फ्यूशीवाद’

कन्फ्यूशीवाद कहता है दूसरे लोग आपके साथ जैसे रहना चाहते हैं, आप भी उनके साथ वैसे ही रहना चाहिए।

यदि आप नहीं चाहते कि लोग आपका अपमान करें, तो आप किसी का अपमान न करें, यदि आप नहीं चाहते कि लोग आपकी आलोचना करें, तो आप किसी की आलोचना न करें। अगर आप नहीं चाहते कि दूसरे आपको नुकसान पहुंचाएं, तो आप किसी को नुकसान न पहुंचाएं। अगर आप नहीं चाहते कि लोग आपका मज़ाक उड़ाएँ, तो आप किसी का मज़ाक मत उड़ाइए। यदि आप अपनी संपत्ति नहीं चुराना चाहते हैं, तो आप किसी की संपत्ति की चोरी न करें।

साथ ही, अगर दूसरे आपका सम्मान करना चाहते हैं, तो सभी का सम्मान करें। यदि आप चाहते हैं कि दूसरे आपसे प्यार करें, तो हर किसी से और हर चीज से प्यार करें। यदि आप चाहते हैं कि दूसरे आपकी प्रशंसा करें, तो सभी की प्रशंसा करें।

यह कन्फ्यूशीवाद का संदेश है।

हमें पता होना चाहिए कि जो हम देते हैं वही हमारे पास आएगा, वही

प्राप्त होगा। हम जितना देते हैं उतना ही पाते हैं। कर्म सिद्धांत का यही अर्थ है।

भाई गुरुदास जी



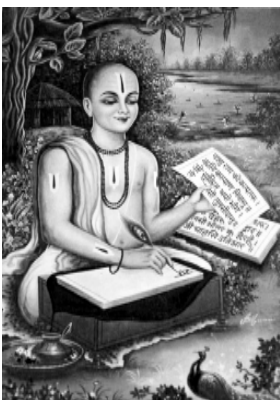
भाई गुरुदास जी भी यही कहते हैं। 'अच्छा करने से बुरा नहीं होगा। बुरा करने से अच्छा नहीं होगा।' भाई गुरुदास जी भी यही कहते हैं। हमें वही लाभ मिलता है जो हम दूसरों के लिए करते हैं। वरना इसका मतलब है कि अगर हम अच्छा करेंगे तो हमें अच्छा मिलेगा।

लेकिन दुनिया में बुराई की जा रही है। अच्छा चाहते हैं। मैं कितना चाहता था, यह योजना के अनुसार नहीं हुआ। जीवन इच्छा के अनुरूप नहीं है। कारण है सृष्टि का 'कर्म सिद्धांत'। इसलिए साधकों को इसे समझना चाहिए।

'अच्छी चीजें उनके लिए होती हैं जो न चाहते हुए भी अच्छा करते हैं। अच्छी चीजें उनके साथ नहीं होती हैं जो इसे चाहते हुए बुराई करते हैं' मतलब यहां जीवन इस बात पर निर्भर करता है कि आप क्या करते हैं लेकिन आपको पता होना चाहिए यह इस बात पर निर्भर नहीं करता कि आप क्या करते हैं, पूजा करते हैं, प्रार्थना करते हैं, संकल्प करते हैं और चाहते हैं। इसलिए उन्होंने कहा, 'जिसने किया वह उतना ही महान है जितना उसने किया'।

कर्म कारण है। इससे बच नहीं सकते।

- एलोलिमस



तुलसीदास

इस संसार में कर्म सिद्धांत का ही राज है।

ऊपर से यह समझ में आता है कि इस संसार में कर्म के सिद्धांत का बहुत महत्व है। ज्ञातव्य है कि प्रत्येक मनुष्य का जीवन कर्म के सिद्धांत पर आधारित है। कर्म का यह सिद्धांत सबसे बड़ा है, जैसे एक राजा सबसे बड़ा होता है। इसलिए तुलसीदास ने कहा है कि कर्म सिद्धांत ही राजत्व है।

रवि गुरुदास

खुद से किये हुए कर्मों का फल कभी न कभी भुगतना ही पड़ता है, इस विषय को मानव कभी नहीं भूलना।

स्वाभाविक रूप से दुनिया में लोग कर्म के इस सिद्धांत का पालन करते हैं।

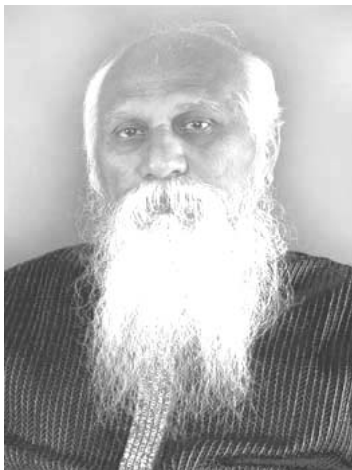


ज्यादा ध्यान और महत्व न देने का कारण यह है कि कर्म करने के तुरंत बाद कोई फल नजर नहीं आता। पाप हो या पुण्य, फल तुरंत नहीं दिखता इसलिए पाप करने वाले पाप करते ही रहते हैं। साथ ही अच्छे कर्म करने वालों को इसका फल नहीं मिलेगा। तो क्या बात है? क्या आप उस पर खर्च किए गए पैसे से अधिक आनंद नहीं ले सकते? यह सोचकर कि वे विलासिता पर खर्च कर रहे हैं।

कर्म जो मनुष्य को इस तरह कार्य करने का कारण बनता है, क्योंकि परिणाम तत्काल नहीं होता है। लेकिन रवि गुरुदास ने क्या कहा? हम कुछ भी करे वह व्यर्थ नहीं होगा। यह इस जीवन में या भविष्य के जीवन में कभी हो सकता है। अवश्य फल मिलेगा।

कहा जाता है कि कर्म का फल भोगना ही पड़ता है। इसलिए गलती और पाप करने वालों को सोचना चाहिए। पाप बंद करो। खासकर हिंसक कृत्यों से बचना चाहिए। यानी कोई जीवन हिंसा नहीं। साथ ही भोग-विलास पर खर्च ना करके नेक कार्यों पर खर्च करना चाहिए।

ब्रह्मर्षि पत्री जी



पत्री जी का कहना है कि हम जो भी कर्म करते हैं, उस कर्म का उचित प्रतिफल समय के संदर्भ में निश्चित रूप से मिलता है।

यह जान लेना चाहिए कि बीज चाहे जितनी जल्दी लगा दिया जाए, फल तुरंत नहीं आता। साथ ही, जैसे एक पेड़ अपने बीज पर निर्भर करता है, वैसे ही हमारे कर्म का भी नतीजा निकलेगा।

उन्होंने यह भी कहा कि यदि आप बड़े पाप करते हैं, तो आपको बड़ी बीमारियाँ मिलेंगी, यदि आप छोटे पाप करते हैं, तो आपको छोटे-छोटे रोग होंगे, और यदि आप विभिन्न पाप करते हैं, तो आपको विभिन्न बीमारियाँ होंगी।

इसका मतलब है कि हमें पता होना चाहिए कि हम जो पाप करते हैं, उसकी गंभीरता के आधार पर हम कठिनाई का अनुभव करेंगे।

उन्होंने कहा, जानवरों का वध मानव जाति का महापाप है। इसलिए पशु वध नहीं करना चाहिए। यह जानना चाहिए कि 'मांस' नहीं खाना चाहिए जो पशु वध का कारण है।

यह नहीं सोचना चाहिए कि कर्म का कोई सिद्धांत नहीं है। कर्म सिद्धांत सही है। सभी योगियों ने ऐसा ही कहा है। कर्म के प्रति सावधान रहें।

नहीं तो बाद में हमें भुगतना पड़ेगा। नरक का अनुभव होना चाहिए। जो लोग पाप करते हैं उन्हें पता होना चाहिए कि वे कितना भी कमा लें, उनके पास कितना भी धन क्यों न हो, वह व्यर्थ है।

उन सभी के ऊपर दिए गए संदेश से हम कर्म सिद्धांत के बारे में कुछ बातें सीख सकते हैं।

हम कर्म का अनुभव कब करते हैं?

विशेषकर पिछले कर्मों का फल वर्तमान में भोगते समय होगा साथ ही वर्तमान कर्मों का फल भविष्य में भोगना होगा।

यहाँ अतीत का अर्थ है इस जन्म में पिछला जीवन। पिछला जन्म भी उनके अतीत के अंतर्गत आता है। इसका अर्थ है कि न केवल पिछले जीवन में बल्कि पिछले जन्मों में भी अनुभव किया जा सकता है।

बहुत से लोग सोचते हैं कि यह जन्म पिछली मां का जन्म है। लेकिन आखिरी जिंदगी नहीं। यह जन्म पिछले जन्मों पर भी निर्भर हो सकता है। इसके अलावा, अतीत अर्थात् इस जीवन में किए गए कर्म भी इस जीवन में अनुभव किए जा सकते हैं। लेकिन कब और कैसे अनुभव प्राप्त कर रहे हैं, यह सब कुछ सृष्टि के निर्णय पर निर्भर करता है। किसी भी मामले में, हम अतीत को वर्तमान में अनुभव करते हैं।

साथ ही, भविष्य का अर्थ है इस जन्म, अगले जन्म या भविष्य के जन्मों में बचा हुआ जीवन। यह उनका भविष्य है। अतः वर्तमान कर्म का फल भविष्य में भोगना है! इसे न केवल अगले जन्म में, बल्कि अगले जन्मों में और इस जीवन में भी अनुभव करना संभव है।

श्री बालयोगी: सब कुछ एक ही स्थान पर दिखना चाहिए, वह है तपस (ध्यान) के कारण। शब्दों में नहीं। माता-पिता, पत्नियां और बच्चे आपके पापों को साझा नहीं करते हैं। तो तुम उनके लिए पाप क्यों करते हो?



देखिए, कुछ पौधे और फलियाँ कुछ ही दिनों में पककर फल देने लगती हैं (बीरा, भिंडी आदि), कुछ पौधों में कुछ ही महीनों में फल आ जाते हैं (जैसे चावल, गेहूँ)। कुछ पौधों को फल देने में वर्षों लग जाते हैं (जैसे नारियल, आम)। साथ ही जो कर्म हम करते हैं उनका अनुभव कभी भी किया जा सकता है।

लेकिन कुछ कर्मों का फल तुरंत दिखाई देता है। उदाहरण के लिए, किसी को भी मारो जो पास से गुजरता है, जो कोई भी आपके बगल में है। वह तुरंत आप पर पलटवार करेगा। उसे डांटो और वह तुम्हें डांटेगा। चोरी करें लेकिन गले में चेन, जेब में पर्स। उन्हें पकड़कर शुद्ध किया जाता है। क्या इसका मतलब तत्काल परिणाम है? साथ ही कुछ कर्म इस जीवन में ही अनुभव किए जा सकते हैं। या भविष्य के जन्मों में भी इसका अनुभव किया जा सकता है। यहां हम स्पष्ट रूप से नहीं कह सकते कि ऐसा कब होता है।

इसलिए पत्री जी कहते हैं, **हम जो भी कर्म करते हैं उसका एक समय होता है। अवसर के अनुसार उस कर्म के अनुकूल हर फल का निश्चित मार्ग होगा।**

जब हम उसका अनुभव करते हैं तो यह सृष्टि के निर्णय पर निर्भर करता है। कर्म के लिए कौन जिम्मेदार है? जो निर्णय करता है वह सृष्टि है अर्थात् प्रकृति अर्थात् ईश्वर।

बहुत से लोगों के बीच एक गलत धारणा है कि 'वे सोचते हैं कि उन्होंने इस जीवन में जो किया है वह इस जीवन में नहीं भोगेंगे। इस जीवन में किए गए कर्मों का फल अगले जन्म में ही भोगा जाएगा'।

इसलिए जो लोग पाप करते हैं, मांस खाते हैं और हिंसा के कारण बनते हैं, वे सोचते हैं की क्या हकीकत में मृत्यु के बाद जन्म होते हैं या नहीं, यह किसको मालूम है।

किसी जन्म में हम इस कर्म का अनुभव करेंगे ऐसा सोच के अब मौज-मस्ती करना क्यों छोड़ दें? अवसर मिलने पर इसका अनुभव किया जाना चाहिए। मस्ती करो और पाप...पाप, ऐसा सोच कर सब का क्यों त्याग करना है, कुछ हुआ तो बाद में देखते हैं। क्या हम अब अच्छा कर रहे हैं? कौन कह सकता है कि अधिक जन्म हैं? आप कैसे बता सकते हैं? लेकिन तब हम नहीं होंगे? इसके बारे में अनावश्यक रूप से क्यों सोचें? अब क्यों सोचें कि अगले जन्म में क्या अनुभव होगा? आराम से रहते हुए इसका अनुभव क्यों नहीं करते?

अर्थात् उनका इरादा इस जीवन में किए गए कर्मों के फल को भोगने का होता है। 'लेकिन जो जानने की जरूरत है वह केवल पिछले जन्मों में ही नहीं है। किए गए अधिकांश कर्म इस जीवन में अनुभव किए जाने की संभावना है। इसलिए, यह न सोचें कि आपने इस जीवन में जो किया है वह अगले जीवन में होगा। यदि आप इस जीवन में पाप करते हैं, तो इस जीवन में आपका भावी जीवन, यानी बुढ़ापा नरकीय होगा। इसलिए शास्त्रों में कहा गया है, 'पापी का जीवन'।

इसका अर्थ है कि जो पाप करते हैं वे अधिक समय तक जीवित रहेंगे। क्या इसलिए कि युवावस्था और युवावस्था के अभिमान में किए गए अनगिनत पापों का अनुभव करने के लिए किसी को लंबे समय तक जीवित रहना पड़ता है? इसलिए आपकी उम्र कितनी भी हो जाए, मौत नहीं आती। इसके अलावा, सभी कठिनाइयाँ हैं, कई प्रकार की बीमारियाँ हैं, कई समस्याएँ हैं। किसी भी स्थिति का अर्थ है कि वे स्वयं कार्य नहीं कर सकते हैं और उन्हें बच्चों पर निर्भर रहना पड़ता है। क्या वे सही देखते हैं? क्या इसका मतलब यह नहीं दिख रहा है? सब तरकीबें हैं। एक तरफ बीमारी की पीड़ा और दूसरी तरफ किसी का ध्यान न रखने का दर्द, ऐसा नर्क महसूस करना, बिस्तर पर लेटकर लेना... सबको सताना... तड़पाना...ऐसा करते करते एक दिन मर जाते हैं।

बुढ़ापे में ही अधिक परेशानी क्यों पैदा होती है?



देखा जाता है कि किसी को जवानी से ज्यादा मुश्किलें और बीमारियां बुढ़ापे में आती हैं। तरह-तरह की दिक्कतें आती हैं।

स्वाभाविक रूप से जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, मुश्किलें और बीमारियां आती हैं, आप क्या सोचते हैं, उम्र बढ़ जाती है। इसलिए उन्हें लगता है कि बीमारियां आ रही हैं।

लेकिन इन सबका कारण प्रकृति में व्यवस्था है!

‘पाप करते ही दण्ड नहीं मिलता अर्थात् कष्ट नहीं होता’ परन्तु जब पाप पक जाता है तभी दण्ड मिलता है अर्थात् कष्ट होता है।

देखो, पेड़ पर जो फल काटा जाता है, वह तुरंत नहीं गिरता। इसे पेड़ से गिरने में कुछ समय लगता है। वह सुपारी अच्छी तरह से बनी और अच्छी तरह से पकनी चाहिए। इतना पक जाने पर यह पेड़ से गिर जाता है। साथ ही इंसानों द्वारा किए गए पापों का तुरंत दंड नहीं मिलता है। यानी मुश्किल नहीं होगी। इसका कारण यह है कि पाप पका नहीं है। पाप पकने में समय लेता है।

एक प्रकार से युवावस्था में किए पापों का भोग लगाने के लिए बुढ़ापा आना ही पड़ता है।

सृष्टि में इस व्यवस्था का कोई अर्थ नहीं है, लेकिन जो युवा हैं वे सोचते हैं कि उनका जीवन हमेशा ऐसा ही रहेगा, युवावस्था के अभिमान से वे किसी की बात नहीं सुनते, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। वे जैसा चाहते हैं, वैसे ही रहते हैं। यानी पसंदीदा चीजें करते हैं।

बदला लेने में अपना समय और ऊर्जा बर्बाद न करें। जिन्होंने तुम्हें दुःख पहुँचाया है उन्हें अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ेगा।

वे जैसा चाहते हैं वैसा व्यवहार करते हैं। वे जो काम करेंगे उससे भविष्य में नुकसान पहुंचेगा? परेशानी लाएगा? उसके बारे में नहीं सोचते। इतना भी नहीं सोचते हैं की यदि यह पाप है या नहीं? सुख भ्रान्ति से जो पाप नहीं करना था वो भी कर देंगे।

प्रकृति और धर्म के नियमों की अनदेखी की जाती है। वे प्रकृति द्वारा दिए गए अवसर को नहीं समझते। वे पाप करते हैं और बुढ़ापे में पीड़ित होते हैं। इस व्यवस्था का निहितार्थ गलत काम करने वालों को मौका देना है! यह उनकी गलती का एहसास करने और उसे सुधारने का अवसर है। अगर वे नहीं समझते हैं तो कितना भी अवसर दिया जाए, सजा के माध्यम से सामने वालों का दर्द समझा जाएगा। उस अवसर को पाप पकना कहते हैं।

देखिए, अगर हमारे बच्चे कुछ गलत करते हैं, तो सबसे पहले हम उन्हें दोष देते हैं। यदि आप फिर से वही गलती करते हैं तो हम आपको चेतावनी देंगे। दोबारा किया तो डांट पड़ेगी। अगर तुम कितना भी कह दो, अगर तुम नहीं सुनोगे, तो हम तुम्हें सजा देंगे और कहेंगे कि समझो। प्रकृति भी हमें अवसर देती है। चाहे कितने भी अवसर दिए जाएं, यदि तुम पाप करना नहीं छोड़ते, तो अंत में तुम्हें दंड मिलेगा। इसे पाप की फसल भी कहा जाता है।

प्रकृति न केवल ऐसा अवसर देती है, अपितु युवावस्था में ही गलतियों और पापों का ज्ञान कराने की कुछ व्यवस्था भी होती है। इस प्रकार यह बड़ों, विद्वानों और धर्मशास्त्रियों के प्रवचनों के माध्यम से कहा जाता है। यह गुरुओं और उन देवताओं की शिक्षाओं से भी सूचित होता है जिन्हें हम मानते हैं। तो भगवद गीता के माध्यम से भगवान कृष्ण, बाइबिल के माध्यम से ईसा मसीह, कुरान के माध्यम से पैगंबर मुहम्मद, गुरु ग्रंथ साहिब के माध्यम से गुरु नानक और कई अन्य न केवल अपनी शिक्षाओं के माध्यम से कर्म के इस सिद्धांत के बारे में बात करते हैं, बल्कि हमें कैसे जीना चाहिए? क्या काम करता है? क्या काम नहीं करता है? पाप क्या हैं? सद्गुण क्या हैं?

इस प्रकार मनुष्य को सृष्टि में अपनी गलतियों और पापों को सुधारने का अवसर दिया गया है। लेकिन यदि आप नहीं बदलते हैं, तो आपको दंडित किया जाएगा।

प्रकृति में एक और व्यवस्था है। यदि आप इन लोगों की बातों को नहीं समझते हैं, तो आपको उन बुजुर्गों और बूढ़ों को देखना चाहिए जो कठिनाइयों और बीमारियों का सीधे सामना कर रहे हैं। क्या वे इतनी कठिनाई में हैं? ऐसी बीमारियाँ? हमें क्यों नहीं मिली? उन्होंने वास्तव में क्या किया? क्या ये मुसीबतें बिना कुछ किये आयीं? अगर आप इस दुनिया में बूढ़े हो गए, तो क्या आपको परेशानी होगी? क्या इसका मतलब यह है कि बूढ़ा होना पाप है? या यह पाप करने के कारण है? ऐसा सोचा जाना चाहिए। सृष्टि में धर्म की सूक्ष्मताओं को जानना चाहिए। उसे अपनी गलतियों और पापों को जानना चाहिए। उन्हें ठीक किया जाना चाहिए।

हमारी गलतियों और पापों को जानने के लिए सृष्टि में कितनी व्यवस्थाएँ हैं। अवसर दिए जा रहे हैं। इतने मौके दिए पर पता नहीं, गिने नहीं तो प्रकृति आखिरकार सजा देगी। इन सभी को मिलाकर पाप पकना कहते हैं। यदि ऐसी सजा के बावजूद व्यवहार में कोई बदलाव नहीं आता है, तो पाप जारी रहने पर आगे की सजा गंभीर होगी। वैसे भी कुदरत सबको सोचने पर मजबूर कर देती है। विचार के माध्यम से अनुभव सभी में परिवर्तन लाता है। खुद को बदल लेता है। पापों को क्षमा करता है।

इस कारण से प्रारब्ध कर्मों का अनुभव युवावस्था में नहीं बल्कि वृद्धावस्था में करने का विधान है। बहुत पापी जीवन। अर्थात् जब तक पूर्वकाल में बहुत अधिक पाप न किये हों, जवानी में अधिक कष्ट न हो और यदि बचपन के कर्मों का भोग करना पड़े, तो जीवन में मधुरता किस बात की?

जीवन में रुचि क्या है? जीवन में अनुभव करने के लिए क्या रहेगा? यदि आप अपनी युवावस्था में कठिनाइयों का सामना करते हैं, तो आप स्वयं

जीवन से विरक्त हो जाएंगे। रुचि नहीं रहेगी फिर यह जीवन क्यों? यह सोचते हुए निराशा और वैराग्य में जीते हैं। आत्महत्या करने की भी संभावना वहाँ होती है।

इसलिए बढ़ती उम्र के साथ मुश्किलें शुरू हो जाती हैं। अंतिम चरण में यह बहुत ज्यादा हो जाता है। जीवन की मधुरता का अनुभव करने के बाद अंतिम अवस्था में वे कर्म को महसूस करके चले जाते हैं। इसलिए प्रकृति में यह व्यवस्था है, यह लचीलापन है।

लेकिन मनुष्य इस पर ध्यान नहीं देते। परवाह नहीं करते। न सुनना, न अभ्यास करना। वे गलतियाँ और पाप करते रहते हैं। महापुरुषों के संदेशों की उपेक्षा की जा रही है। और मुश्किलें आने पर क्या होता है? जब वे लंबे समय से कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं तो वे पूजा-पाठ कर रहे हैं। लेकिन, पाप नहीं रुकते। इस प्रकार युवावस्था में किए गए पाप और युवावस्था का अभिमान वृद्धावस्था में कष्टों और रोगों का कारण बनते हैं।

वचन में किए गए पापों के लिए नरक भुगतते समय उनके सारे पाप याद किए जाएंगे। फिर सोचते हैं, किया हुआ कर्म कहाँ जाएगा? अनुभव करना? अब हम क्या करें? फिर उसने नहीं सुना। उस समय सिवाय विलाप करने के और कुछ नहीं था कि उसने सोचा भी नहीं था।

इसलिए हाथ जलने से पहले कुछ सोच लेना चाहिए अर्थात् कर्म के सिद्धांत को जान लेना चाहिए।

पाप भोगते हुए कुछ भी नहीं किया जा सकता। इसे अनुभव करने के अलावा। इसलिए पाप करने से पहले सोच लें। बड़ों की सुनें। पृथ्वी पर आए हुए देवताओं की बात सुनें, ध्यान से सोचे। इस जीवन में किए कर्मों का फल भी इसी जीवन में मिलेगा।

संभावना से अवगत रहो। पाप कर्म मत करो। हिंसा मत करो।

साथ ही, कुछ लोग अच्छे कर्म करने, सेवा करने और अच्छे कार्यक्रमों

में धन दान करने से यह सोचकर हिचकिचाते हैं कि इस जीवन में किए गए कर्मों का फल इस जीवन में नहीं मिलेगा। आप कितना भी कर लें, जो अब नहीं चलने वाला उसके लिए ऐसे काम क्यों करें? क्या आप इस तरह के काम करने के बजाय उस पैसे को मौज-मस्ती पर खर्च कर सकते हैं?

इसके अलावा, बहुत सारे लोग कहते हैं की मैंने बहुत से अच्छे कर्म किए हैं, लेकिन फाइदा क्या हुआ मेरा जीवन अच्छा नहीं है, सब कुछ कठिन है! और वह सब गलत काम करता है, पाप करता है... लेकिन उसका जीवन अच्छा है। कुछ लोग हैं जो कहते हैं कि उनके लिए सब कुछ एक साथ आ रहा है। साथ ही, ऐसा क्यों करें जो अभी आया ही नहीं कि अगले जन्मों में कुछ आएगा? क्या वह जन्म है? या नहीं कौन जाने? इसके बारे में क्यों सोचें? भले ही वे अच्छा कर सकते हैं या ऐसा करने का अवसर मिलता है, कुछ लोग इसे करना बंद कर देते हैं।

यदि कुछ लोग बिना फल पाये इस जीवन में पाप करते हैं! और कुछ लोग पवित्र गतिविधियों को छोड़ रहे हैं। यह गलत धारणा है कि इस जीवन में यह सब करने से इस जीवन में फल नहीं मिलेगा। लेकिन जागरूक रहें। हमारे द्वारा किए गए अधिकांश कर्मों को इस जीवन में भोगना पड़ता है। इसका अनुभव करो। इसलिए पाप मत करो। अच्छे काम करो।

कर्मों के प्रकार:

कर्म 3 प्रकार के होते हैं।

(1) वर्तमान कर्म , (2) संचित कर्म, (3) प्रारब्ध कर्म

मनुष्य का जीवन पहले कर्म के बिना शुरू होता है अर्थात जब कोई पहली बार जन्म लेता है। जब मनुष्य के रूप में पहली बार जन्म लेता है तो उसका जन्म बिना किसी कर्म के होता है। तभी से उसका कर्म चक्र शुरू होता है। अर्थात उस पर 'कर्म सिद्धांत' लागू होता है।

वह इस तरह से शुरू हुए जीवन में कर्म कर रहा है। उसके जैसा जो

कर्म किए जा रहे हैं उन्हें 'वर्तमान कर्म' या 'अगामी कर्म' कहा जाता है। तो वह उस जीवन में बहुत से कर्म करता है। किए गए कर्मों में जो अनुभव होता है वह अनुभव के रूप में रहता है।

कर्मों को मृत्यु के बाद व्यक्ति के खाते में जमा किया जाता है। उन्हें 'संचित कर्म' कहा जाता है।

जब वह दूसरा जन्म लेता है तो इन संचित कर्मों में से कुछ कर्म लेकर दूसरा जन्म लेता है। इस प्रकार किए गए कर्मों को 'प्रारब्ध कर्म' कहा जाता है। वह उस जन्म में इन 'प्रारब्ध कर्मों' का अनुभव करता है और फिर से वर्तमान में नए कर्म करता है। ऐसा करते समय, उनमें से कुछ का अनुभव होता है और जब किसी की मृत्यु होती है, तो शेष वर्तमान कर्म पिछले संचय में जुड़ जाते हैं।

इसे हिंदू पौराणिक कथाओं में 'चित्रगुप्त' कहा जाता है। इसे ही आध्यात्मिक रूप से 'दिव्य अभिलेख' कहा जाता है। लेकिन प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किया गया प्रत्येक कर्म एक अभिलेख है।

ऐसे ही जन्म होते रहते हैं। कितने समय तक होंगे? यानी जब तक उनके खाते में कर्म हैं। लेकिन अगर आप यहां देखें तो करने का कर्म ज्यादा होगा और भोगने का कम। इसलिए कर्म जन्म-जन्मान्तर बढ़ते ही रहते हैं। लेकिन कम नहीं होते। यानी संचय बढ़ता ही जाता है।

यहाँ फिर एक शंका उत्पन्न होती है। यदि ऐसा हो गया तो यह जीवन कब समाप्त होगा? कर्म बढ़ रहे हैं। आप कितना भी अनुभव कर लें, यह खत्म नहीं हुआ है, है ना? और यह जीवन कब समाप्त होगा?

क्या इसी तरह जन्म लेते दुख भोगना पड़ेगा? ऐसा लगता है की क्या दूसरा रास्ता नहीं है? लेकिन इसका परिष्कार बिना कर्म से शुरू हुए मानव जीवन, कर्मों को अंत करने से ही समाप्त हो जाता है। मतलब कैसे शुरू हुआ वैसे ही अंत होना चाहिए। सृष्टि में यही व्यवस्था है।

लेकिन एक तरह जैसे जन्म लेने के समय कैसे पैदा होगा, वैसे ही मरने

के समय में भी जायेगा। यानी जब वह पैदा होता है तो कुछ भी नहीं लाता है। इसी तरह, वह जाने पर कुछ भी नहीं लेकर जाएगा इसका कारण है जैसे आता है वैसे ही जाना है। यह सृष्टि की व्यवस्था है। इसी प्रकार बिना कर्म के जन्म कैसे प्रारम्भ होता है उसी प्रकार जन्म से मुक्त होने के लिए कर्मों का अंत करना चाहिए। फिर कर्म का अंत कैसे होगा? कर्म कैसे जाएगा?

भगवान कृष्ण ने इसका रास्ता दिखाया। उन्होंने जो कहा वह था 'ज्ञानाग्नि दग्ध कर्माणाम्'। कहा जाता है कि ज्ञान की अग्नि में सारे कर्म भस्म हो जाते हैं।

अर्थात् जो विशेष प्रकार से ज्ञान प्राप्त करता है! यानी अगर आप आग की तरह जलते हैं! उस ज्ञान की अग्नि में, ये सभी कर्म जल जाते हैं, और वे मोक्ष प्राप्त करते हैं, अर्थात् बिना जन्म के। तब वे कर्म सिद्धांत से बाहर आ जाते हैं।

कर्म को कितने प्रकार से विभाजित किया जा सकता है?

तीन प्रकार में विभाजित किया जा सकता है। (1) पाप कर्म, (2) पुण्य कर्म, (3) मुक्ति कर्म इन्हें आत्मकर्म कहा जाता है।

जिन लोगों ने पाप कर्म किए हैं वे नरक लोक (निचली दुनिया) में जाते हैं और पृथ्वी पर वापस आते हैं। दुःख को महसूस करते हैं।

साथ ही, जो लोग पवित्र कर्म करते हैं वे स्वर्गीय लोकों (उर्ध्व लोकों) में जाते हैं और पृथ्वी पर वापस आते हैं। सुख को भोगते हैं।

मुक्ति कर्म अर्थात् आत्मकर्म, जो आत्मोन्नति के सम्बन्धित कर्म:

(1) ध्यान साधना (2) स्वाध्याय, (3) सज्जन सांगत्य जो करते हैं वे बुद्धिमान हो जाते हैं और सभी कर्मों को दग्ध करके मुक्ति प्राप्त करते हैं।

क्या पुण्य से पाप दूर होता है?

बहुत से लोग सोचते हैं कि यदि वे अच्छे कर्म करेंगे तो उनके पाप दूर हो जाएंगे। इसलिए, वे पापों से छुटकारा पाने के लिए अनुष्ठान करते हैं। लेकिन आपको यह जानने की जरूरत है कि सिर्फ अच्छे कर्म करने से बुरे कर्म दूर नहीं हो जाते। कारण सृष्टि में किसी भी चीज का परिणाम है। सत्कर्म करोगे तो भोगोगे। इसी तरह, यदि आप पाप करते हैं, तो आप दुःख भोगेंगे। यदि आप दोनों करते हैं, तो आपको सुख भी मिलेगा और दुःख भी। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि कोई सभी पवित्र कर्म करता है। ऐसे लोगों के लिए जीवन में सब कुछ सुखमय होता है। वे खुशी से रहेंगे और किसी भी कठिनाई का सामना नहीं करेंगे।

साथ ही, दूसरे ने पुण्य और पाप दोनों तरह के कार्य किए। मान लीजिए बुरे कर्मों के फलस्वरूप वह दुर्घटना में जल जाता है, उसके हाथ-पैर जल जाते हैं, बिजली के झटके से अंग-अंग जल जाता है और इलाज के लिए अस्पताल जाता है। पुण्य कर्म करने से वह धनी होता है। इसलिए सुपर स्पेशियलिटी अस्पतालों में एसी रूम में इलाज होता है। अर्थात् यहाँ उसे सुख के साथ-साथ रोग भी भोगता है। कारण पुण्य और पाप दोनों के कारण है।

लेकिन मान लीजिए कि किसी दूसरे व्यक्ति ने पाप कर्म किया है। उसका भी एक एक्सीडेंट हो जाता है और वह अस्पताल में भर्ती हो जाता है। लेकिन पैसों के अभाव में उन्हें सामान्य अस्पतालों में इलाज कराना पड़ता है और जनरल वार्ड में एक कॉमन बेड पर रहना पड़ता है। यानी यहां रोग है लेकिन भोग नहीं। कारण यह है कि उसने पाप किया है, पुण्य नहीं।

हम दुनिया में दो तरह के लोगों को देखते हैं। जो पुण्य और पाप दोनों करते हैं वे सुख से रोग भोगते हैं और जो बिना पुण्य के पाप करते हैं और बिना सुख के केवल रोग भोगते हैं। इसलिए दुनिया के अमीर लोग भी पीड़ित हैं।

हम देख रहे हैं अमीरों के लिए, काश उनके पुण्य के साथ उनके पाप

भी दूर हो जाते। कठिनाइयाँ क्यों आती हैं? इसलिए किसी भी कर्म का फल उसका अपना होता है यह जानना चाहिए।

पाप कैसे नष्ट हो सकते हैं?

पापों से मुक्ति का उपाय भगवान श्रीकृष्ण ने बताया था। उन्होंने कहा कि आत्मज्ञान की अग्नि में सभी पाप कर्म भस्म हो जाते हैं।

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।

सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं सन्तरिष्यसि ।। (भ. गी. 4-36)

तात्पर्यः भले ही आप सभी पापियों की तुलना में सबसे बड़े पापी हों, अर्थात्, भले ही आप पूरे महासागर के जितना पाप करते हों, आप ज्ञान के एक बूंद से पापों के उस महासागर को पार कर सकते हैं।

इसलिए पाप कर्मों से छुटकारा पाने के लिए सत्कर्म करना नहीं अपितु ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। पत्नी जी ने भी यही कहा था।

विगत... जागरूकता... विघटन।

पत्नी जी ने कहा है कि भूतकाल को जानने से ही गत कर्म का नाश होता है। वह निकल जाता है। अर्थात् यदि पूर्व में किए गए पापों को समझ जाने से वे विघटित हो जाते हैं, जिसका अर्थ है निकल जाना, विलीन होना।

यहां हम राधास्वामी के संदेश को याद करते हैं। 'आप जो भी कर्म करते हैं वही अनुभव प्राप्त होता है।'।

आपको अनुभव प्राप्त करना है। देखो, वह किसी के पैर पर अत्याचार करता है, उसका हाथ काटता है, तेजाब डालता है, गरीबों का अपमान करता है, नीची जाति को देखता है, धोखा देता है, क्षतिग्रस्त करता है, चोरी करता है। जीवों को सताता है। उसने यह सब क्यों किया? उनका कष्ट कैसा है? वे मुझे नहीं पता कि मुझे कितना कष्ट होगा, क्योंकि मैंने वह गलती की, मैंने वह पाप किया।

इसलिए यदि भविष्य में ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है, अर्थात् यदि वह उसी कठिनाई का अनुभव करता है, तो वह स्वयं अनुभव से जानेगा कि दर्द कैसा होगा। यानी उसे अनुभव करना होगा। तब आप दूसरे व्यक्ति की पीड़ा को समझ पाएंगे। क्या तुमने उसे इतना सताया है? उसने कितना कष्ट उठाया? प्राणी को कितना कष्ट हुआ? मेरे कारण उनके लिए यह कितना कठिन था? मैं कितना गलत था? मुझे ऐसी गलती दोबारा नहीं करनी चाहिए। वह फिर से ऐसा पाप न करने का निश्चय करता है।

वह भूल, वह पाप फिर नहीं करेगा। कितने ही प्रलोभन! कितना भी गुस्सा हो! परिस्थितियां कैसी भी हों! चाहे उसने कितना भी नुकसान किया हो! कठिनाई से भी! वह दोबारा ऐसी गलती नहीं करेंगे। कारण ने अनुभव से अपनी गलती सीखी। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह सचेत है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह समझ गया।

अब इस अनुभव के कारण उसे यह ज्ञान हो गया है कि उसे वह गलती नहीं करनी चाहिए और पाप नहीं करना चाहिए। यह ज्ञान उन्होंने स्वयं अनुभव करके प्राप्त किया। इसलिए पत्नी जी कहते हैं अनुभव ही ज्ञान है। ऐसा अनुभव ज्ञान व्यवहार में आता है। वह गलती, वह पाप भविष्य में, भविष्य के जन्मों में नहीं करेगा। इसके अलावा, वह दूसरों को भी वह गलती न करने के लिए कहता है।

लेकिन अगर आप इसे अपने मुंह से कहते हैं, तो क्या वह सुनेंगे? नहीं सुनते। गलतियों से बचें? यानी रुकते नहीं हैं, हिंसा करते रहते हैं। लेकिन उन्हें जो अनुभव मिलते हैं, वह दोबारा नहीं करेंगे। इसलिए यह जानना चाहिए कि अनुभव ज्ञान व्यवहार में आता है।

इस सृष्टि का अर्थ है प्रकृति और ईश्वर अनुभवों के माध्यम से सबको पाठ पढ़ाते हैं। सही तरीके से, अच्छे तरीके से डालता है। धीरे-धीरे यह सभी में परिवर्तन लाता है। इस प्रकार प्रत्येक जन्म में वह कुछ अनुभव प्राप्त करता है और कठिनाइयों के माध्यम से कुछ सबक सीखता है। वह अपनी गलतियों को

सुधारता है। पत्नी जी कहते हैं कि सभी गलतियों को सुधारने के लिए सभी को लगभग 400 से 500 जन्म लेने पड़ते हैं।

इससे हम जो समझते हैं वह यह है कि जीवन में सभी कठिनाइयाँ सबक सीखने, गलतियों को सुधारने, और बदलने के लिए हैं। ऐसा परिवर्तन लाने के लिए सभी को कर्म करते रहना चाहिए। भले ही वे पाप कर्म हों। इसलिए भगवान कृष्ण ने कहा **माते संगोस्त्वकर्मणि** (भ. गी. 2-47)। इसका अर्थ है 'कर्म करना बंद नहीं करना है।

इसलिए कठिनाइयों से ग्रस्त न हों। हर कठिनाई से पाठ सीखने की कोशिश करें। फिर से वही गलती और पाप मत करना। तो जो कोई भी अनुभव से प्राप्त ज्ञान से यह समझ लेता है कि क्या गलतियाँ और कौन से पाप हो गए हैं और उन पाप कर्मों को फिर से करता है, अगर उसके द्वारा अतीत में किए गए ऐसे कोई पाप कर्म हैं, तो वे सब टूट जाएंगे यानी जलेंगे। यानी उन्हें रद्द कर दिया जाएगा। यानी अब ऐसे पाप भोगने की जरूरत नहीं है।

इसलिए गीता में कहा गया है कि 'ज्ञानाग्नि दग्ध कर्माणाम्' अर्थात् ज्ञान की अग्नि में सारे कर्म भस्म हो जाते हैं।

इसका मतलब है कि अगर हम कोई गलती सुधारते हैं या फिर से करते हैं तो हमें ऐसी कठिनाइयों का अनुभव करने की आवश्यकता नहीं है। यानी यह जान लें कि ऐसी मुश्किलें दोबारा नहीं आएंगी।

इसलिए पत्नी जी ने कहा, 'अगर हम बीती बातों को भूल जाएं, तो हम सुधर जाएंगे।' ज्ञान समुपार्जन से पाप कर्मों से मुक्त हो जाए।

अच्छे कर्म करते हुए भी आपको कष्ट क्यों होता है?

बहुत से लोग पीड़ित हैं। मैं बहुत सारी अच्छी चीजें कर रहा हूँ। मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। लेकिन मुझे इतनी परेशानी क्यों है? भगवान मुझे क्यों पीड़ित कर रहा है? भले ही पड़ोसी बहुत सारी गलतियाँ और पाप कर रहा हो, उसका जीवन बहुत अच्छा है, उसके लिए सब कुछ अच्छा है। क्या सच में

भगवान का अस्तित्व है? यदि ऐसा है तो ऐसा क्यों होता है? उन्हें इस पर शक है। उनके लिए इसका कोई मतलब नहीं है। इसलिए वे उस ईश्वर को दोष देते हैं जिस पर वे बचपन से इतना विश्वास करते थे। देवता और धर्म को बदलते रहते हैं।

क्या इसलिए कि बीज बोने के तुरंत बाद नहीं उगता? इसमें थोड़ा वक्त लगेगा। साथ ही पूर्व में किए कर्मों का फल भी अब भोगने को मिल रहा है। साथ ही वर्तमान कर्मों का फल भविष्य में भी भोगना होगा।

यही 'पैगंबर मुहम्मद' ने कहा था। उन्होंने कहा, 'यह दुनिया एक ऐसा खेत है जो कल (अगले जन्म) के लिए आज फसल उगाता है'।

हम भविष्य की जरूरतों के लिए अब कैसे फसलें लगाते हैं, कर्म हम भविष्य के लिए यानि अगले जन्म के लिए करते हैं।

इसलिए पूर्व में किए गए पापों का फल अब मिल रहा है, तो ऐसा लगता है कि अच्छे कर्म करते समय कठिनाइयाँ आ रही हैं। लेकिन अभी किए गए अच्छे कर्मों का फल भविष्य में अवश्य ही भोगना पड़ेगा।

इसी प्रकार जो लोग पिछले जन्म में किए गए पुण्यों के कारण बुरे कर्म करते हैं, उनके साथ अच्छी चीजें होती हैं, लेकिन जो बुरे कर्म वे अभी कर रहे हैं, उनका फल भविष्य में भोगना पड़ता है। बहुत से लोग पीड़ित हैं क्योंकि वे सृष्टि में इस व्यवस्था को नहीं समझते हैं। इसलिए श्री रामकृष्ण परमहंस ने कहा, 'हम जो भी कर्म करते हैं, वही होता है, परिणाम का अनुभव होना चाहिए' उन्होंने कहा।

कर्म में भावनाएँ प्रमुख भूमिका निभाती हैं।

कर्मकांड करते समय इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए। उस कर्म के बजाय उस कर्म को करने का उनका क्या मतलब है जो इसका कारण बनता है? उद्देश्य क्या है? इस रचना में यही मायने रखता है।

उदाहरण के लिए, ऊपर से वे जो करते हैं वह एक अच्छे काम जैसा

लगता है। लेकिन अंदर का मकसद शायद अलग है, यह द्वेषपूर्ण है, यह स्वार्थी है, यह अशुद्धता की भावना से किया जाता है।

ऊपर से ऐसा लगता है कि वे उनका भला चाहते हैं और उनका भला करते हैं। लेकिन उनकी भावना ऐसी नहीं होती है। वे उनके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं और उन्हें नुकसान पहुंचाने के इरादे से अच्छा करते दिखाई देते हैं। ऐसे लोगों पर भरोसा करके धोखा खाने वाले कई हैं, कई ऐसे हैं जो हारे हैं, और कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें भुगतना पड़ा है।

संसार में एक का भाव दूसरे को शायद न पता चले। लेकिन सभी भावनाओं को विधाता जानते हैं। वह जान सकता है कि कर्म कौन कर रहा है और किस भाव से कर रहा है।

सर्वान्तर्यामी का अर्थ है कि वे सभी प्राणियों में फैले हुए हैं। वह सबके बीच में हैं और जानते हैं कि हर कोई क्या कर रहा है। साथ ही वह उनके मन की अंदर की भावनाओं को भी जानता है। वह न केवल जानता है बल्कि कर्मों के साथ-साथ कर्मों और भावनाओं को भी दर्ज करता है। भावना के आधार पर ही परिणाम प्राप्त होता है।

क्योंकि भावना पर ही कार्य आधारित हैं। अर्थात् जैसे मन शरीर को बताता है, इंद्रियां काम करती हैं, वैसे ही कर्म में मन प्रमुख भूमिका निभाता है।

ईश्वर की भावना को अधिक महत्व दिया जाता है। इसलिए भगवान को कहा जाता है। इसलिए भगवान को **भावप्रिय** कहा जाता है न कि **बाह्यप्रिय** जिसका अर्थ है कि उन्हें बाहरी गतिविधियों की परवाह नहीं है। वह उन लोगों के इरादे को ध्यान में रखता है जो उन कार्यों के पीछे हैं।

इसलिए कहते हैं कि कोई भी काम खुलकर करो। इसका अर्थ है बिना किसी परिणाम की आशा किए कोई भी कार्य करना। कारण यह है कि यदि हम किसी चीज की अपेक्षा भी करते हैं, यदि हम जो अपेक्षा करते हैं उसमें कोई त्रुटि हो तो परिणाम पूरा नहीं हो सकता है। इस बात की भी संभावना है कि किया हुआ काम बर्बाद हो जाएगा।

साथ ही बिना किसी अपेक्षा के किया भी जाए तो भी किए गए कार्य का फल अवश्य मिलता है। किये हुए कर्म का फल जो मिलना है, वह मिलेगा तो फिर क्यों पूछें कि यह चाहिए, वह आना है ऐसा। यह आप जो करते हैं उससे आता है। लेकिन हमने कितना किया है? हम नहीं जानते कि हम जो करते हैं उसके लिए हम कितने योग्य हैं? तो क्यों पूछें? आप जो करना चाहते हैं वह करना महत्वपूर्ण है। किसी भी फल की अपेक्षा किए बिना इसे स्वतंत्र रूप से करना सबसे अच्छा है।

क्या कर्म के लिए परिणाम मांगा जा सकता है?

मूल रूप से हमने ऐसा किया था, यह चाहते हैं? क्या यह आना चाहिए? पूछने का अधिकार कहाँ है? हमारे पास वह अधिकार नहीं है। इसलिए गीता में श्रीकृष्ण ने ऐसा कहा है।

श्लोक: 'कर्मण्येवाधिकार स्ते माँ फलेषु कदाचन

माँ कर्मफलहेतुर्भू मा ते संगोस्त्वकर्मणि' (भ. गी. 2-47)

तात्पर्य:- आप में कर्म करने की शक्ति है। इसके अलावा, कर्म के फल की अपेक्षा करने का कोई अधिकार नहीं है। आप कर्मफल के कारण नहीं हो सकते। ऐसे कर्मकांड करना बंद न करें।

अर्थात् किए गए कार्य के परिणाम की अपेक्षा करने का कोई अधिकार नहीं है।

पुराणों में कर्म सिद्धांत के बारे में

आम लोगों को इस कर्म सिद्धांत के बारे में समझाने के लिए विद्वानों, ऋषियों, पुराणों और पुराण कथाओं के माध्यम से जानकारी दी जाती थी। आइए उनमें से कुछ का पता लगाएं।

यमलोक



यमलोक में, यमधर्मराज को सिंहासन पर विराजित किया जाता है। उनके बगल में चित्रगुप्त हैं। चित्रगुप्त के सामने एक बड़ा सा ग्रंथ है। उस ग्रंथ में मनुष्य के सारे पाप-पुण्य लिखे हैं। यमलोक में यमभट्ट भी हैं। वे मुर्दों को अर्थात् जिनकी मृत्यु हो चुकी है, उन्हें यमलोक ले आते हैं। जिन लोगों ने पाप किया है उन्हें यमलोक में दंडित किया जाता है। साथ ही पाप की सजा भोगते रहते हैं।

संक्षेप में, यह पुराणों के माध्यम से विद्वानों द्वारा दुनिया को दिया गया था। यही यमलोक का सार है! यमलोक के बारे में सब को यही समझ है!

लेकिन क्या यमलोक है जिसके बारे में हमें सोचना चाहिए? या नहीं? क्या कोई यम है? है या नहीं? इस पुराण के माध्यम से हमें जो संदेश जानने की आवश्यकता है वह महत्वपूर्ण है। इसके अलावा उन विद्वानों ने इस कथा के माध्यम से मानव जगत को क्या संदेश दिया? वास्तव में वह संदेश क्या है? हमें यह जानने की जरूरत है। इसे क्रियान्वित किया जाना चाहिए। तभी हमारा जीवन सुखमय होगा। तो आइए जानें इस पुराण का अर्थ, इसमें निहित संदेश!

देखिए, जैसे ही किसी की मृत्यु होती है, यम के दो दूत सबसे पहले आते हैं। वे मृतकों को पकड़कर यमलोक ले जाते हैं। वहां उन्हें यम के सामने रखा जाता है। तब यमधर्मराज ने चित्रगुप्त से पूछा, जो उनके बगल में थे, उन्हें बताएं कि उन्होंने कौन से पाप किए हैं। चित्रगुप्त तुरंत अपने सामने बड़ी किताब खोलते हैं और पन्ने पलटते हैं। उस पेज पर मृतक का अकाउंट है। वह उस खाते को देखता है और अपने द्वारा किए गए सभी पापों को पढ़ता है। यम

धर्मराज इसे सुनते हैं और तदनुसार दंड देते हैं। यमभट्ट उन पर उन दंडों को लागू करते हैं। यह यमलोक में होने वाला कार्यक्रम है। लेकिन यहां हर चीज में एक संदेश है। आइए जानें कि यह क्या है।

‘दो यमभट्ट मृतकों को ले जाने के लिए आते हैं’। स्वाभाविक रूप से, दुनिया में कोई क्या सोचता है कि मृत्यु के बाद कोई जीवन नहीं है। लेकिन मृत्यु के बाद भी हम मौजूद हैं। इस दृश्य से हमें यह संदेश मिलता है कि हमारे पास अभी भी जीवन है ... और कौन मरा है? वह शरीर है।

जल गया, वह ऊपर चला गया। इसलिए इसे ‘मृत’ कहा जाता है। मर गया मतलब ऊपर चला गया। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वो अब नहीं रहे..

इससे हमें यह जानना चाहिए कि हम मरते नहीं हैं, हमारे अभी कई जन्म होते हैं। और जब तक हमारे पास जीवन है, क्या हमें उस जीवन के बारे में सोचना चाहिए? क्या वह जीवन भी अच्छा नहीं होना चाहिए? क्या आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि उस जीवन को बेहतर बनाने के लिए क्या करना चाहिए? और ये सब सोच रहे हो? नहीं। क्योंकि हम इस बात को नहीं जानते हैं, इसलिए उन विद्वानों ने हमें यह संदेश दिया है कि इस कथा के माध्यम से अब भी हमारे पास जीवन है।

इतना ही नहीं। यह केवल पृथ्वी ही नहीं है जिसे हम इस सृष्टि में देखते हैं। इस दृश्य में एक और संदेश यह है कि कई अनदेखी दुनियाएँ हैं। इसके कारण हम कुछ समय के लिए इस शरीर के साथ... इस दृश्य जगत में रहते हैं। हम यह भी जान सकते हैं कि उस शरीर को छोड़ने के बाद हम अदृश्य रूप से अदृश्य लोकों में चले जाएंगे। इतना ही नहीं यमभट्ट आएगा यह कहने का निहितार्थ यह है कि दो अदृश्य गुरु आएंगे और हमें उस दुनिया में ले जाएंगे, ये कहने के लिए ही यम दूत के बारे में बोलते हैं। यानी हम इस एक सीन का मतलब जान सकते हैं। इस दृश्य के माध्यम से हम यह भी जान सकते हैं कि विद्वानों ने कितना संदेश दिया है।

इस प्रकार, यम दूत मृतकों को यमलोक ले जाकर यम के सामने खड़े करते हैं तब यम ने चित्रगुप्त से पूछेंगे की इन्होंने क्या पाप किया है? तब चित्रगुप्त अपने पास मौजूद बड़ी किताब को पलटते उनका हिसाब निकालते हैं।

जान लें कि आपको बाद में गणना करनी होगी। इसलिए यह मत सोचिए कि हम क्या करते हैं, यह पूछने वाले कोई नहीं हैं। निः संदेह हम जो करते हैं हर काम का जवाब देना होता है। इसलिए काम करने से पहले सोचकर करना ही इसका सन्देश है इसके अलावा, इस दृश्य में एक और संदेश यह है कि पृथ्वी पर कितने भी महान लोग गलतियाँ करते हैं, उन्हें इस सृष्टि में एक ही अदालत में समान रूप से दोषी होना होगा, और उन्हें हमारी गलतियों और पापों के लिए जवाब देना होगा।

चित्रगुप्त के पास जो अभिलेख का किताब है जिसका अर्थ है कि इस सृष्टि में कोई भी कुछ भी करे, जैसे भी कर्म करे सभी का रिकॉर्डिंग हो जाता है, इस बात का ध्यान रखना चाहिए। आमतौर पर हम गलतियाँ और पाप करते हैं और सोचते हैं कि उन्हें कोई नहीं देखता। हमें लगता है कि कोई नहीं जानता। लेकिन भले ही यहां कोई न देखे, इस सृष्टि में हमारे द्वारा किया जाने वाला हर कार्य और हर पल रिकॉर्ड किया जाता है। कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम उस काम को कितनी दूर किसी जगह पर करते हैं, चाहे हम उसे एक कमरे में करते हैं, जिसके सभी दरवाजे बंद हैं या एक अंधेरी गुफा में! चित्रगुप्त के बड़े किताब में

कहा गया है कि सब कुछ रिकॉर्ड किया जाएगा। यानी इस रचना में सबका खाता है। उन विद्वानों ने हमें इस दृश्य के माध्यम से संदेश दिया है कि हमारे कर्म दर्ज हैं। आध्यात्मिक भाषा में चित्रगुप्त से लिखे हुए इस सूची पबड़े किताब कीफ को 'आकाशीय अभिलेख' कहा जाता है। बाद में, 'चित्रगुप्त उनसे किये गये हर एक गलतियों को पढ़ता है'।

उसने अपने जीवन में कितनी मुर्गियाँ खाईं! उसने कितनी बकरियां

मारों! कितनी मछलियाँ तेल में तली जाती हैं! कहते हैं साथ ही, उसने कितने लोगों को धोखा दिया, कितने लोगों को उसने गाली दी, अपमानित किया, नुकसान पहुँचाया और कष्ट पहुँचाया। वह पढ़ता भी है। और तो और, जो किसी की टांग उठाए, किसी का हाथ काट दे, किसी पर तेजाब डाल दे, उसकी पत्नी को शारीरिक रूप से प्रताड़ित कर दे, यानी जो कुछ भी करे, कितनी भी बार करे, सब पढ़ा जाएगा, यानी हर कर्म, हर गलती, हर पाप को दर्ज किया जाएगा। ऐसा मत सोचो कि किसी ने नहीं देखा।

आप इसे कब अनुभव करेंगे? आप इसे कहाँ अनुभव करते हैं? आपको कैसा लगता है? इसका अर्थ है कि जब पाप पकता है, तो वह निश्चित रूप से पृथ्वी पर कष्टों, रोगों और दुर्घटनाओं के रूप में अनुभव किया जाएगा।

फिर 'यमधर्मराज उसे उसके पापों के अनुसार दंड देंगे' अर्थात् यदि मुर्गियों के पैर नहीं काटे जाते हैं, तो पैर काट दिए जाते हैं। यदि मछली तेल में तली हुई है, तो उन्हें भी तेल में तलना चाहिए। यदि वह अपनी पत्नी को पीटता है, तो यमधर्मराज यमभट्टों को उसे कोड़े मारने का आदेश देंगे। फिर यम दूत दंड देंगे।

इस दृश्य का अर्थ यह है कि वहाँ यम दंड देंगे। यमभट्ट दंड नहीं देते। इस सृष्टि में जो भी है उसे अपने पापों की सजा भोगनी है। यानी इस दृश्य का



संदेश यही है कि कष्टों को अपनाना ही पड़ता है। इसके अलावा, यदि आप कोई पाप करते हैं, तो आपको ऐसी सजा भुगतनी पड़ेगी। इस दृश्य का संदेश यह जानना है कि आप जितना अधिक करेंगे, आपको उतनी ही अधिक सजा मिलेगी।

इसके अलावा, हमने जो पाप किए हैं, उनके लिए हमें दंड नहीं भुगतना पड़ेगा। हम इसे यहां कष्टों के रूप में अनुभव करेंगे। भगवान कृष्ण ने यह भी कहा कि शरीर द्वारा किए गए पापों के लिए शरीर को दंडित किया जा सकता है, लेकिन शरीर छोड़ने वाली आत्मा के लिए कोई कुछ नहीं कर सकता है। आत्मा न आग से भस्म होती है, न जल से गीला होती है, न आयुध से छिद्र होती है, न वायु से बुझती है।

इसलिए आत्मा का कोई कुछ नहीं कर सकता। शरीर द्वारा किए गए पापों का दंड शरीर को ही देना चाहिए। इसलिए उन विद्वानों ने कहा कि यदि हम किसी प्रकार का अत्याचार करेंगे तो हमें ऐसी यातना भोगनी होगी, यदि हम कोई पाप करेंगे तो हमें ऐसा नरक भोगना होगा और यदि हमसे कोई गलती होगी तो हमें इस पृथ्वी पर अपने शरीर से ऐसी सजा भोगनी होगी। यमलोक हमें दृश्य के माध्यम से एक संदेश देता है। इसलिए इस बात को समझकर हमें गलतियां नहीं करनी चाहिए। पाप मत करो। हिंसा मत करो। मांस नहीं खाना चाहिए।

लेकिन क्या यम लोक है? या क्या कोई यम है? या यह महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि उन विद्वानों ने इस कथा के माध्यम से दुनिया को क्या संदेश दिया।



अतः यदि हम पुराणों को शिक्षाप्रद दृष्टि से देखें तो हमें बहुत कुछ प्राप्त होगा। लेकिन गंभीर रूप से, सब कुछ भ्रमित करने वाला है। सब कुछ घाटा है।

अगर कोई हिंसा करता है तो ऐसी हिंसा को सहना ही चाहिए!

रामायण में दशरथ महाराज एक बार शिकार खेलने गए। जंगल में उन्हें कहीं दूर से एक महिला के पानी पीने की आहट सुनाई दी। दशरथ ने लक्ष्य को उस दिशा में साधा और बाण छोड़ दिया। लेकिन हैरानी की बात यह रही कि महिला की चीख की जगह लड़के की चीख सुनाई दी। दशरथ चकित हो गए और उस ओर चले गए।



एक मुनि बालक तीर से मारा गया और जीवन-मरण के संग्राम में है। उस बालक राजा दशरथ को देखते ही बोला, राजा आपका मैंने क्या बिगाड़ा है? तुमने मुझे इतनी बुरी तरह मारा। मैं किसी का अहित करने वाला व्यक्ति नहीं हूँ, इसके अलावा मैं बूढ़े और अंधे माता-पिता का इकलौता पुत्र हूँ और मैं उनका सहारा हूँ। वे प्यासे थे तो मैं पानी लेने आया था। तुम मुझे बुरी तरह मारना

चाहते थे। मैं ज्यादा समय नहीं जिऊंगा। यह पानी ले लो और मेरे माता-पिता को दे दो और उनकी प्यास बुझाओ। उसकी मृत्यु हो गई।

दशरथ जल उसके वृद्ध माता-पिता के पास ले आए। वह क्षेत्र में गए। माता-पिता ने आवाज सुनी और पूछा कि तुम कौन हो। तब दशरथ ने सारी कहानी कह सुनाई।

उनके बेटे की मौत के बारे में जब मां को पता चला तो वह सदमे को सहन नहीं कर सकीं और मौके पर ही उनकी मौत हो गई।

उस अंधे बूढ़े पिता ने भी अत्यंत दुःख के साथ हमारा पुत्र छीन लिया है, जो हमारा एकमात्र सहारा है राजा। आपने हमें निराधार बना दिया है। हम अपने बेटे के बिना नहीं रह सकते। पिता यह कहकर पुत्र का दुःख सहन नहीं कर सका कि मृत्यु हमारा आश्रय है। पुत्रहीनता के कारण हम किस शोक से मरे? बूढ़े पिता की भी मौके पर ही मौत हो गई, यह श्राप देते हुए कि तुम भी उसी दुःख से मर जाओगे।

दशरथ के पुत्र ने किस प्रकार दुःख पहुँचाया और एक वृद्ध दंपत्ति की मृत्यु का कारण बना! उसी कारण से यानी दुःख के कारण उनकी मृत्यु हुई। अर्थात् उसने जिस प्रकार का कर्म किया, वैसा ही फल उसे भोगना पड़ा।

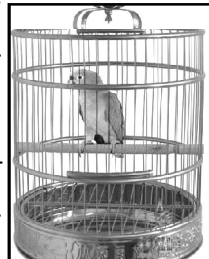
भक्त रामदास



अगर हम भक्त रामदास का इतिहास भी लें तो हमें यही सिखाया जाएगा। उसने मनोरंजन के लिए एक तोता पाला। उन्होंने उसे एक पिंजरे में रखा और सावधानी से देखते थे। वह उसे फल और सब्जियाँ देते थे। पैसे की हेराफेरी के आरोप में उसे कैद कर लिया गया। उन्होंने बहुत कुछ सहा। कोई गलती न करने पर भी उसे सजा दी

गई। हालाँकि उसने दुनिया की गणना में गलती नहीं की, लेकिन उसने सृष्टि की गणना में पाप किया। एक तोता, एक ऐसा पक्षी जिसे आजादी से और खुशी से घूमना चाहिए जो पिंजरे में है। अपनी खुशी के लिए पंखों की आजादी छीन ली। वह पक्षी को कोई हिंसा नहीं किया।

न मारा, न उसका मांस खाया। ऐसे ही उसे पिंजरे में रखा। लेकिन सृष्टि के हिसाब में बांधे हुए तोते की



कितनी भी सावधानी से देखभाल की जाए, उसे अपनी आजादी खोनी ही थी।

सृष्टि में दूसरों (पशु, पक्षी, जल जीव) की स्वतंत्रता छीन लेना पाप है। इस प्रकार रामदास को उनके द्वारा किए गए पाप के अनुसार दंडित किया गया। उसे वहीं गिरफ्तार कर लिया गया।

इसका संदेश है कि हम सभी अपनी खुद की मस्ती के लिए किसी और की आजादी मत छीनना।

उन्हें लगता है कि वे वहां मनोरंजन के लिए बढ़ रहे हैं हम हैं लेकिन वे यह नहीं जानते कि वे सृष्टि के हिसाब-किताब में अपनी आजादी छीन रहे हैं। हमें रामदास के इतिहास से एक और संदेश जानने की जरूरत है। स्वाभाविक रूप से संसार में यह दृढ़ विश्वास है कि यदि हम देवताओं की पूजा, आराधना और प्रार्थना करते हैं, तो वे हमें बचाएंगे, हमारी रक्षा करेंगे, हमारे पापों को क्षमा करेंगे, पाप करने पर भी हमें कष्टों से मुक्त करेंगे, और एक मजबूत विश्व में विश्वास है कि वे भक्तों का साथ देंगे। इसलिए हर कोई पाप कर रहा है। हम सोचते हैं कि क्योंकि हम पूजा कर रहे हैं, यह हमारे लिए नहीं है। भगवान है, कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम क्या करते हैं या हम कैसे व्यवहार करते हैं! ऐसा माना जाता है कि चाहे कितनी ही गलतियां और पाप क्यों न हो जाएं।

लेकिन अगर आप रामदास का इतिहास देखें तो वह राम के बहुत बड़े भक्त थे। एक तरह से रामदास की भक्ति हम सब से बढकर है। और भगवान राम ने रामदास का साथ क्यों नहीं दिया, जो इतने बड़े भक्त थे? क्या आप दण्डमुक्ति देखते हैं? क्या यह मुश्किल नहीं हुआ? एक छोटी सी गलती यानि पाप को क्षमा क्यों नहीं कर देते? इसपर थोड़ा सोचना।

वे कहते हैं कि भगवान पापों को क्षमा करते हैं, है ना? और रामदास का पाप माफ़ क्यों नहीं करते? इसका अर्थ यह हुआ कि कोई भी ईश्वर किसी के पाप क्षमा नहीं करता। जिन लोगों ने पाप किया है उन्हें पता होना चाहिए कि वे इस सृष्टि में तब तक नहीं बच सकते जब तक कि उन्हें कष्ट न उठाना पड़े। इस भ्रम से छुटकारा पाएं कि भगवान बचाएंगे। पाप मत करो।

सोचें, आप पाप क्यों करते हैं क्योंकि भगवान आपको क्षमा करते हैं और आपकी रक्षा करते हैं? यदि आप पाप नहीं करते हैं तो यह काफी है, है ना? सोचें, आप पाप क्यों करते हैं? आप प्रार्थना क्यों करते हैं? यदि आप पाप नहीं करते हैं, तो आप प्रार्थना करने की जरूरत नहीं है। है ना?

जो काम करने से दुःख पहुंचे वह काम करना क्यों और उसको भुगतना क्यों? इसलिए हमें भक्त रामदास के इतिहास से समझना होगा। व्यक्ति को

सावधान रहना चाहिए कि वह ईश्वर पर निर्भर न रहे, बल्कि पाप करने से बचे।

थोड़ा सोचो। क्या रामदास ने चिड़िया को सताया था? क्या उसको मारके खा लिया था? केवल पिंजरे में डाला। उसका खयाल रखा। हालाँकि, राम दास को, जो एक भक्त था, कितनी सजा दी गई थी? और हम सब रामदास के भक्त हैं न? अगर हम किसी पक्षी यानी मुर्गे को तड़पाते हैं, मारते हैं और खाते हैं तो कैसी सजा है? इसके बारे में सोचो।

इसलिए वे कहते हैं कि हिंसा मत करो। खासकर वे कहते हैं कि जीवन हिंसा मत करो। कहा जाता है कि मांस खाकर हिंसा मत करो। इसलिए सृष्टि में कर्म के सिद्धांत को समझें और उसके अनुसार जिएं और जीवन का आनंद लें। कर्म के सिद्धांत से लाभ के लिए जो सृष्टि में कर्म के इस सिद्धांत को समझते हैं वे जीवन में उनको अच्छा खासा मुनाफा मिल सकता है। क्योंकि हम इस सृष्टि में जो कुछ भी चाहते हैं इसे पाने के लिए संभव है। खासतौर पर हम जो करते हैं उसके कारण जैसा कि जीवन है, चीजों के बारे में थोड़ा सावधान रहना ही काफी है। सबसे पहले, हानिकारक कार्य न करें। लाभदायक कार्य अर्थात् सेवा करनी चाहिए। 'सेवा' का अर्थ है बिना किसी अपेक्षा के दूसरों को लाभ और खुशी देने वाले कार्य करना अर्थात् देना! जब भी हम सेवा करेंगे तो हमारा भविष्य और हमारा जीवन हमेशा लाभदायक और सुखद रहेगा। हम जितनी अधिक सेवाएं करते हैं, हमें उतना ही अधिक लाभ मिलता है। यानी हम जितना देते हैं, हमें उतना ही मिलता है। यदि हम कोई सेवा करेंगे तो हमें ऐसा लाभ मिलेगा।

उदाहरण के लिए, यदि हम अमीर बनना चाहते हैं, तो हमें अधिक धन प्राप्त करने के लिए अधिक धन देना होगा। जितना अधिक हम देते हैं, उतना ही हमें मिलता है। यहाँ एक संदेह आता है अधिक पैसा देने के लिए! जिसके पास धन है उसके लिए यह संभव है लेकिन जिसके पास धन नहीं है उसके लिए यह संभव नहीं है ना? और जिसके पास पैसा नहीं है इसका मतलब है कि गरीब के पास भविष्य में अमीर होने का कोई मौका नहीं है? ऐसा लगता है लेकिन इस सृष्टि में गरीब भी अमीर बन सकता है। क्योंकि इस सृष्टि में सभी समान हैं! इसलिए सभी के पास समान अवसर हैं। और कैसे?

आपका क्या मतलब है? पृथ्वी पर कितना दिया जाता है? वे इसे देखेंगे। लेकिन सृजन का कितना प्रतिशत दिया जाता है? इसे महत्व दिया जाता है। यानी जो है उससे कितना ज्यादा है? वही देखा जाता है, अर्थात् गिना जाता है।

उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति जिसके पास कुछ हजार है तो वह सैकड़ों का दान देता है वह कुछ करोड़पति के लाखों के दान से बढ़कर है। इसी का दान अधिक समझा जाता है।

इसका अर्थ है कि जिस व्यक्ति ने भविष्य में सैकड़ों दिए हैं, उसके पास अधिक धन प्राप्त करने का मौका है, इसका मतलब है कि वह योग्य है। तो हमने कितना दिया? इसे मत देखो कि हमने कितना दिया है।

जो सृष्टि में धर्म की इस सूक्ष्मता को नहीं समझते वे निराश होते हैं। उन्हें लगता है कि हम कुछ भी नहीं दे पा रहे हैं, कि उनके पास देने का अवसर नहीं है, और जो वे देते हैं वह महान नहीं है, लेकिन वे देना चाहते हैं तो भी देना बंद कर देते हैं। लाख देने वालों को देखकर ऐसा देते हैं क्योंकि वे महान हैं। महादान हो रहा है। तो हम कहाँ दे सकते हैं? इससे वे चिंतित हैं। मेरे पास कुछ और नहीं बल्कि उससे ज्यादा है वह देने वाला कहलाता है।

ऐसा कह कर वो देना बंद कर देंगे.. और कुछ लोगों के पास सेवा करने के लिए और महादान करने के लिए पैसा होना चाहिए ना? सोच रहा है और पैसा कमाने की कोशिश कर रहा है। यदि आप अच्छी कमाई करते हैं, तो आप अच्छा दान कर सकते हैं। सोचें कि आप अच्छे सेवा कार्यक्रम कर सकते हैं। ऐसा सोच समझकर थोड़ा भी दान नहीं करना है। अधिक धन कमाने के लिए वे गलतियाँ करते हैं, पाप करते हैं और अधर्म करते हैं। अंत में पुण्य की बातों के बाद उन्हें पाप लग जाता है।

इसलिए जान लें कि यदि आप दान करने के लिए अपनी कमाई में से कुछ दे सकते हैं, तो यह एक महान दान और एक महान पुण्य है। किसी भी मामले में, कर्म के सिद्धांत से अच्छी तरह अवगत रहें। लाभदायक कर्म करें। हानिकारक कर्म न करें। विशेष रूप से मुक्तिकर्म अर्थात् आत्म कर्म करें। ज्ञान प्राप्त करें और मुक्ति प्राप्त करें। जीवन का भरपूर सदुपयोग करें।

कर्म को कैसे विभाजित किया जा सकता है?

कर्मों को दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) देह कर्म (2) आत्म कर्म

देह कर्मों को फिर से दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) पाप कर्म, (2) पुण्य कर्म

इसी प्रकार आत्म कर्मों में भी (1) पाप कर्म (2) पुण्य कर्म शामिल हैं। एक प्रकार पाप कर्म से हानि होती है, जबकि पुण्य कर्म से लाभ।

जब शरीर की बात आती है, मतलब दूसरों को और अन्य प्राणी पर अत्याचार, छल, भ्रष्टाचार, अधर्म, झूठ, बलात्कार, अपमान और निन्दा यह सब पाप कर्म हैं और इनके कारण नष्ट हो जायेंगे। वह है शारीरिक रोग, कष्ट, और परेशानियां।

साथ ही यदि आप शारीरिक पुण्य कर्म करते हैं, अर्थात् दूसरों की सेवा करते हैं, दान करते हैं, अच्छे कर्म करते हैं, सुख देते हैं, तो आपको लाभ मिलेगा। यानी आनंद। धनलाभ होगा। सुखों का अनुभव करेंगे। सभी विषयों में लाभ होता है, आनंदमय जीवन बिताएं।

एक प्रकार के आत्म कर्म को ध्यान कहा जा सकता है। क्यों की केवल ध्यान ही आत्मा से सम्बंधित है।

इसलिए, यदि आप आत्मा के मामले में पाप करते हैं, तो आप मोक्ष से बहुत दूर हैं। अच्छे कर्म करोगे तो मोक्ष के करीब पहुंचोगे। मोक्ष से दूरी 'आत्मा' को क्षति देती है। यदि कोई मोक्ष तक पहुंचता है, तो क्या लाभ होता है, और आत्मा के पाप क्या हैं?

(1) झूठ को सच कहना, सच्चाई के मामलों में गुमराह करने के लिए।

(2) ध्यान करने वालों को बाधा पहुंचाना, बाधा डालना, परेशान करना, ध्यान की गतिविधियों को बिगाड़ना।

(3) ध्यान करनेवालों को असुविधा करना मतलब ध्यान करने के समय में सेल फ़ोन्स का प्रयोग करना, बीच में शब्द करना, जोर से बात करना, बच्चों को लाना और उन्हें रूलाना।

(4) ध्यान करने वालों और आध्यात्मिक पथ पर चलने वालों को गलत सलाह देना और गलत तरीके सिखाना उनके आध्यात्मिक विकास में बाधा डालता है।

(5) साधना से प्राप्त शक्ति को खो देने की सलाह।

(6) संकल्प से दूसरों के कष्टों को अपने ऊपर डालना।

(7) अर्जित की गई छोटी-छोटी शक्तियों का दिखावा करना, बढ़िया बातें करना, ऐसी बातें करना जो नहीं है और उनसे दूसरों को वश में लाने का प्रयत्न करना।

(8) आध्यात्मिकता का उपयोग अपने स्वार्थ और स्वलाभ के लिए करना।

(9) आध्यात्मिक तरीके से पैसा कमाने की कोशिश करना। ये सब आध्यात्मिक पाप हैं। ऐसे लोग मोक्ष से कोसों दूर होते हैं। इसके अलावा, यदि

उनके पाप चरम पर पहुंच जाते हैं, यानी यदि वे सीमा पार कर जाते हैं, तो वे इस आत्मिक मार्ग से हटा दिए जाएंगे। इसका मतलब है कि आप अपनी योग्यता खो देंगे।

इसलिए पत्नी जी कहते हैं, 'आध्यात्मिक पथ पर कितने ही लोगों को गुमराह किया गया है। जो लोग परवाह करते हैं वे तब तक मोक्ष प्राप्त नहीं करेंगे जब तक वे बुद्धिमान नहीं बन जाते। कहा जाता है कि जन्म लेते ही रहना है।

आत्मा से जुड़े हुए पुण्य कर्म:

1) ध्यान अभ्यास। 2) बुद्धिमान पुस्तकें पढ़ना। 3) बुद्धिमान पुरुषों की संगति करना। 4) इस प्रकार सेवा का अर्थ है सभी को ज्ञानी बनाना।

ज्ञानी बनने का अर्थ है ध्यान करना, साधना करना, ध्यान के कार्यक्रम आयोजित करना, ध्यान के कार्यक्रमों में तन, मन और धन से योगदान देना, भाग लेना और प्रोत्साहित करना।

5) पिरामिड बनाना, ध्यान केन्द्रों की स्थापना करना। ऐसे केन्द्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करना।

ये सभी ध्यान से संबंधित हैं। ज्ञान प्राप्त करने में सहायक होते हैं। मनुष्य जिन साधनों से मुक्ति प्राप्त करता है, वे ही आत्मा को मोक्ष प्रदान करते हैं अर्थात् उसे जन्म से मुक्त करते हैं। इसे आत्म पुण्य कहते हैं और बड़ों से इन्हीं को आत्म कार्य कहा जाता है।

इस तरह के पुण्य कर्म करने से व्यक्ति मोक्ष के करीब पहुंच जाता है। अतः वे शरीर के पापों के कारण दुःख भोगते हैं। पुण्य कर्मों के कारण आनंद।

साथ ही आत्मा संबंधी पाप कर्मों के कारण भी मोक्ष से कोसों दूर रहते हैं। इसका अर्थ है कि जन्म बढ़ेगा। पुण्य कर्मों के कारण व्यक्ति मोक्ष के करीब पहुंच जाता है। यानी जन्म कम होंगे।

जो आध्यात्मिक मार्ग पर आते हैं वे जन्म कम करने आते हैं, जन्मों को मिटाने आते हैं। लेकिन भले ही वे इस रास्ते पर आएँ और पाप करें, वे जो चाहते हैं वह हासिल नहीं करेंगे और इससे भी ज्यादा खो देंगे। अपने लक्ष्य से और दूर जाएंगे। आध्यात्मिक पथ पर यात्रा करना तलवार खींचना है। इसलिए जो लोग साधना के मार्ग पर आ गए हैं उन्हें बहुत सावधानी से कर्मकांड करना चाहिए। सोचो और बहुत कुछ करो। सच बताना चाहिए। उचित सलाह देनी चाहिए।



श्री तटवर्ती वीरा राघवराव का हिन्दी किताब

- | | |
|------------------------|----------|
| 1) आत्म शास्त्र । | Rs.200/- |
| 2) ध्यान विद्या । | Rs.160/- |
| 3) भगवद् गीता का सार | Rs.160/- |
| 4) एक और जन्म । | Rs.160/- |
| 5) सत्य मार्ग । | Rs.150/- |
| 6) भगवान कौन हैं । | Rs.120/- |
| 7) कर्म सिद्धांत । | Rs.120/- |
| 8) ब्रह्म ज्ञान । | Rs.100/- |
| 9) यह जीवन क्यों है? । | Rs.100/- |

For Books please contact :

Tatavarthi Veera Raghavarao

BHIMAVARAM. Ph: 94403 09812

Note from the Publisher

platform for the mind, body & soul.

Are you looking to share your stories and experiences
with the world? We publish a wide range of books
on self-help and spirituality.

Visit our website to explore our books

www.mbpublish.com

Also, feel free to get back to us at **contact@mbpublish.com**,
with any feedback or suggestions! We would love to hear from you.

Call us on **+91 8447749297** for bulk orders,
or if you'd like to publish with us.



**MB
Publishing
House**



/mbpublishinghouse



@mbpublishinghouse



श्लोकः कर्मण्येवाधिकार स्ते माँ फलेषु कदाचन

माँ कर्मफलहेतुर्भू मा ते संगोस्त्वकर्मणि

(भ. गी. 2-47)

तात्पर्य:- आप में कर्म करने की शक्ति है। इसके अलावा, कर्म के फल की अपेक्षा करने का कोई अधिकार नहीं है। आप कर्मफल के कारण नहीं हो सकते। ऐसे कर्मकांड करना बंद न करें।



MB
Publishing
House

f /mbpublishinghouse

@mbpublishinghouse

Rs.120/-